गर्लफ्रेंड को वैलेंटाइन पर क्या दें

सजग सरस युवा पत्रिका
फरवरी 2022 ₹ 40.00

मुक्ता

एवरीथिंग अबाउट रोमांटिक फरवरी

क्रश के बिना कोई जिंदगी नहीं

प्रेम का इजहार प्रेमपत्र से

डेट पर जाओ न रोका किस ने है

पिछला प्रेम और सैक्स

स्टाइल औफ द मंथ

अब और नहीं ड्राई स्किन

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

Piramal
हर दिन
एक क्लियर
मैट फेस
के लिए
LACTO®
CALAMINE
दूर रखता है
• पिंपल्स
• पैची स्किन
• ब्लैकहेड्स
• डार्क स्पॉट्स
WITH
Kaolin Clay
Piramal
LACTO®
CALAMINE
Face Lotion
KAOLIN CLAY
ABSORBS ONLY EXCESS OIL
Paraben Free
For Oily Skin
120ml

फीडबैक और सवालों के लिए, ग्राहक सेवा अधिकारी से संपर्क करें
टोल फ्री नंबर 1800 22 9898 या consumercare@piramal.com
*हर व्यक्ति में परिणाम अलग-अलग हो सकते हैं.
**लैक्टो कैलामाइन ऑयली फेस केयर लोशन अतिरिक्त तेल अब्सॉर्ब करके तैलीय त्वचा संबंधी समस्याओं को रोकने में मदद करता है.

मुक्ता

फरवरी 2022 अंक : 1005

लेख

गर्लफ्रैंड को वैलेंटाइन पर क्या दें 4
प्रेम का इजहार प्रेमपत्र से 6
क्रश के बिना कोई जिंदगी नहीं 8
नए फ्रैंड से ऐसे हों फ्रैंडली 20
डेट पर जाओ न रोका किस ने है 24
डायनैमिक हैंडबैग्स 26
अब और नहीं ड्राई स्किन 30
टीनऐजर्स एंड वैक्सिंग 32
स्टाइलिश बूट्स का ट्रैंड 43
पिछला प्रेम और सैक्स 44

कथा साहित्य

प्यार नहीं पागलपन 10
बूआजी 36

स्तंभ

मुक्त विचार 9
प्रेम समस्याएं 42

फीचर

Style of the month 28
वैब सीरीज रिव्यू : क्या देखें 34
बौलीवुड buzz 38
Small screen 46

कविता

सितम ढाया न कर 22
मधुर सुर 22

दिल्ली प्रैस
सामाजिक क्रांति की पत्रिकाएं
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)
33 पत्रिकाएं 10 भाषाएं

रचनाओं, स्तंभों व संपादक को पत्रों के लिए ईमेल:
editor@delhipress.biz

8527666772

निमंत्रणों प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल :
invities.pressrelease@delhipress.biz

ग्राहक विभाग के लिए ईमेल :
subscription@delhipress.in

संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय : दिल्ली प्रैस भवन, ई-8 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

अन्य कार्यालय : ● 31 ग्राउंड फ्लोर, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. फोन : 079-26577845 ● ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, जी.डी. अंबेडकर मार्ग, वडाला-400021. फोन : 022-24122661 ● 11, फर्स्ट क्रौस, वालप्पा गार्डन, शिवाजी नगर, बैंगलुरु-560051. फोन : 080-42013076 ● 14, पहली मंजिल, सीसंस कौंप्लैक्स, मांटीअथ रोड, चेन्नई-600008. फोन : 044-28554448 ● 122, पहली मंजिल चिनाय ट्रेड सैंटर, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003. फोन : 040-27896947, 27841596 ● जी-7 पायोनियर टावर्स, 1 मेरीन ड्राइव, कोच्चि-682031. फोन : 0484-2371537. ● 16 ए, अमृता बनर्जी रोड, पहली मंजिल, कालीघाट, नजदीक वासुश्री सिनेमा कोलकाता-700026. ● 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, पटना-800001. फोन : 0612-2323840 ● फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, लखनऊ-226001. फोन : 05222618856 ● गीतांजली टावर, शौप नं. 114, (डाक्टर व्यास अस्पताल के सामने) अजमेर रोड, जयपुर-302006. ● बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी 80 फुटा रोड, पीछे अशोका गार्डन थाना, भोपाल-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन पीटीई लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित.
संपादक : परेश नाथ.

वार्षिक मूल्य केवल चैक/ड्राफ्ट/मनीऔर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
Ph.: 91-41398888, Extn. No. 119,221,264.
(Mon to Sat 10 am to 6 pm)
Mobile/SMS/Whatsapp: **08588843408**
Email : subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Private Ltd., New Delhi-110055, INDIA. No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.

मूल्य : एक प्रति 40.00. एक/दो वर्ष : ₹ 522/996. विदेशों में मूल्य : एक प्रति : 0.47 (डाक व्यय अतिरिक्त)

	International Subscription Price Air mail Charges	Express Delivery Europe & South America	Express Delivery SAARC Countries	Express Delivery Rest of Countries
1 year	50	210	120	140
2 year	95	420	240	275

(All the Prices given are in US$)

गर्लफ्रैंड को वैलेंटाइन पर क्या दें

रोमांटिक फरवरी का महीना है. इस महीने प्यार अपना एक साल पूरा कर के अगले साल पर कदम रखता है तो अपने पार्टनर को देने के लिए प्यारा सा गिफ्ट तो बनता है बौस. गिफ्ट ऐसा जो दिल को छू जाए.

फरवरी का रोमांटिक महीना है. लव बर्ड्स के लिए यह किसी फैस्टिव अवसर से कम नहीं जिस में अपनी बात अपने क्रश से पहली बार, झिझकते ही सही, कहने का अच्छा मौका मिलता है और अपने लविंग पार्टनर पर दिल खोल कर प्यार बरसाने व अपने रिश्ते को और अधिक गहराइयों में ले जाने का मौका होता है.

बहुत प्रेमी ऐसे होते हैं जो अपने लववन से प्यार तो करते हैं लेकिन उन्हें जताना नहीं जानते या जताने में विश्वास नहीं रखते. उन का मानना होता है कि प्यार जताने की चीज नहीं होती, प्यार वह एहसास होता है जो सामने वाले को अपनेआप महसूस हो जाता है.

अब सोचो, आप की प्रेमिका आप को प्यार से 'आई लव यू' कहे और आप पलट

लेख • रोहित

कर एक बार भी 'आई लव यू टू' इसलिए न कहें, 'भई, हम तो सख्तई में रहते हैं, प्यार बहुत है पर ये 3 शब्द बोल के प्यार कम थोड़े हो जाएगा.' तो बात मानिए ऐसा सोचना आप की गलतफहमी है. कहीं ऐसा न हो, प्यार ही हाथ से चला जाए. क्योंकि अगर आप अपनी प्रेमिका से अपना प्यार ऐक्सप्रैस ही नहीं कर पाए तो यकीनन आगे गलतफहमी ही पैदा होनी है.

सुननेकहने के लिए यह बढ़िया है कि प्यार किया तो जताना क्या, पर भई, प्यार जता दोगे तो क्या कुछ बिगड़ जाएगा? हमारी मानो तो प्यार बढ़ेगा ही. इंसानों ने लाखों सालों के ह्यूमन डैवलपमैंट में कुछ फीलिंग्स और एक्सप्रैशन डैवलप किए हैं तो जाहिर है इन का यूज अपनी फीलिंग्स जताने के लिए ही किया जाता है.

अब सुनिए पौइंट की बात, प्यार दबा के नहीं, जता के ही बढ़ता है. रोमांटिक फरवरी में वैलेंटाइन का मौका है. आप का क्रश, आप का प्यार जो भी हो, आप उसे जब तक ठीक से अपने दिल की बात एक्सप्रैस नहीं करेंगे तब तक उस के दिल तक आप की फीलिंग्स सीधी नहीं पहुंच पाएंगी.

नया जमाना है तो नए जमाने के कुछ सलीके हैं. कोविड–19 का समय है तो एहतियात जरूरी है लेकिन प्यार और फ्रैंडशिप अपनी जगह हैं. इसलिए हम आप को बताने जा रहे हैं अपने प्यार को सादगीभरे तरीके से एक्सप्रैस करने वाले ऐसे गिफ्ट्स जिस से आप अपनी प्यारभरी फीलिंग्स को आसानी से अपनी गर्लफ्रैंड को कन्वे कर दें.

हैंड रिटन लैटर विद चौकलेट : ओल्ड इस गोल्ड. यकीन मानिए तरीका पुराना है पर आज भी अपनी बातों को सब से सलीके से कहने और सरप्राइज देने के लिए एकदम कारगर. आप ने पूरे साल अपनी प्रेमिका को व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम या फेसबुक में बहुत मैसेज भेजे होंगे, लेकिन उन प्लेटफौर्म्स में न वह दम है न खास वजन. हैंड रिटन लैटर जो कमाल पहले करते थे, जैसा रोमांसिज्म पहले जगाते थे आज भी वे उतने ही कारगर हैं. यह नया एक्सपीरियंस देगा और एक्साइटेड भी होगा.

फोटो कोलाज : यह एक आइडल वैलेंटाइन डे गिफ्ट है. अपनी प्रेमिका के साथ बिताए गए यादगार पलों की तसवीरों का कोलाज चेहरे पर खुशी ला देता है. परिपक्व हो चुके प्रेमियों के लिए यह एक बेहतरीन विकल्प है.

स्पैशल प्लांट के सीड्स : अब यह हैरान कर सकता है कि सीड्स (बीज) गिफ्ट देने की भी कोई चीज है. देखिए, किसी रैस्टोरैंट में डिनर या लंच के लिए जाना बड़ी बात नहीं, या गर्लफ्रैंड को शौपिंग कर गिफ्ट देना भी बड़ी बात नहीं. लेकिन लव बौंडिंग समय के साथ बढ़े, इस के लिए ऐसी चीज अगर आप अपनी गर्लफ्रैंड को देते हैं जिस का वह खयाल रखे तो इस से रिश्ता मजबूत होगा.

पेट् (लिटल डौगी) : रिलेशनशिप केयरिंग करना सिखाता है. अगर आप की प्रेमिका या गर्लफ्रैंड पेट् पालना पसंद करती है तो उसे एक सुंदर सा पेट् गिफ्ट में दे सकते हैं. डौगी उस की पसंद का हो, यह ध्यान रखना बहुत जरूरी है.

अपने हाथ से बनाई स्पैशल फूड डिश : कोविडकाल में बाहर निकलना सेफ नहीं. कहीं घूमना एक बेहतर औप्शन हो सकता था लेकिन ऐसी सिचुएशन में बाहर निकलना ठीक नहीं तो आज सब से अच्छा औप्शन यह है कि घर में इस दिन को पूरी तरह से एंजौय किया जाए. गर्लफ्रैंड के लिए स्पैशल डिश बनाई जा सकती है. प्यारभरी कोई रोमांटिक फिल्म देख कर एक अच्छे दिन का गिफ्ट दिया जा सकता है.

भरोसा : किसी भी रिश्ते में भरोसा सब से अहम होता है. आप तमाम गिफ्ट खरीद के दे सकते हैं, पर भरोसा पाना और भरोसा देना बहुत जिम्मेदारी का काम होता है. भरोसा देना भी हर किसी के बस का नहीं. डरिए नहीं, मेरे भरोसे का मतलब यह भी नहीं कि जनमजनम तक साथ रहूंगा टाइप, ऐसा भरोसा भी बचकाना ही है.

ऐसा भरोसा हो जिस में आप की पार्टनर को आप के साथ कम्फर्ट महसूस हो, जब तक वह आप के साथ है तब तक आप उसे कमिटैड लगें, आप से कोई बात कहने में वह झिझके नहीं, चाहे आप की कमजोरियां ही क्यों न हों और किन्हीं अगरमगर से आशंकित न हो. ●

दिल्ली प्रेस

बुके नहीं,
बुक दीजिए

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
डिजिटल और प्रिंट में
सही राह बताएं,
सही आनंद दें

सरिता ₹60 गृहशोभा ₹60 मुक्ता ₹40 सरस सलिल ₹12 मनोहर कहानियां ₹50 सत्यकथा ₹40
THE CARAVAN ₹150 MOTORING ₹125 Highlights Champs ₹50 Highlights Genies ₹50

Email: subscription@delhipress.in | circulation@delhipressgroup.com
Mob: 8588843402

प्रेम का इजहार प्रेमपत्र से

चाहे दुनिया कितनी भी आधुनिक हो जाए, तकनीक कितनी भी एडवांस हो जाए, पर अपनी प्यारभरी फीलिंग्स को बताने का जो जरिया पत्र होता है वैसा और कोई नहीं.

लेख • शोभा कटारे

हम और आप इनकार नहीं कर सकते हैं कि आज से कुछ वर्षों पहले तक प्यार के इजहार का जो तरीका हुआ करता था, उस में अब काफी बदलाव आ चुका है.

आजकल प्यारभरे संदेश भेजने के लिए भले ही अब व्हाट्सऐप और ईमेल, फेसबुक, चैट जैसी तमाम हाईटैक सुविधाएं हों, पर पुराने समय के पत्र लिखने के तरीके को आज भी सब से अच्छा माना जाता है.

आज से कुछ वर्षों पहले प्यार के इजहार का जो तरीका हुआ करता था, उस में अब काफी बदलाव आ चुका है उस की जगह व्हाट्सऐप और ईमेल, फेसबुक, चैटिंग आदि ने ले ली है.

भला इंटरनैट और मोबाइल के जमाने में पत्र लिखने का क्या काम, लेकिन यकीन मानिए यदि आप अपने प्यार के इजहार के लिए पत्र लिखेंगे तो आप अपनी भावनाएं बहुत अच्छे से उन तक पहुंचा पाएंगे और आप द्वारा लिखे शब्द उन के दिल पर गहरा असर डालेंगे क्योंकि कई बार डिजिटल मीडिया हमारे मन के ऊपर वह प्रभाव नहीं डाल पाता है जो कि एक लिखा हुआ पत्र.

जब आप किसी को पत्र लिखते हैं तो दिल की गहराइयों से और बहुत सोचसमझ कर लिखते हैं और कुछ शब्द हमारे दिल में हमेशा के लिए बस जाते हैं. आखिर जब कोई

बात दिल से निकलेगी तो उन के दिल तक अवश्य ही पहुंचेगी. पत्र दो दिलों को जोड़ने में सेतु का काम करता है.

प्यार के इजहार के लिए इमोजी नहीं उपयोग कीजिए प्रेमभरे शब्दों को

आजकल हम कुछ भी कहने के लिए शब्दों का कम और इमोजी का उपयोग ज्यादा करते हैं. लेकिन यकीन मानिए, आप के शब्दों में जो जादू है वह इमोजी कभी भी नहीं ले सकती. इसलिए प्यार के इजहार के लिए खत लिखें.

जब बात आप के दिल से निकलेगी तो उन के दिल तक अवश्य ही पहुंचेगी. आप दिल की प्यारभरी बातें जरा विस्तार से कीजिए, शौर्टकट से नहीं. इस के लिए मदद लीजिए प्रेमभरे शब्दों की.

प्यार जताने का सब से आसान तरीका

प्यार एक बहुत ही खूबसूरत शब्द है और इस के एहसास मात्र से ही हम खुशी महसूस करने लगते हैं. हमारे प्यार में जितनी सादगी हो, वह उतना ही और खूबसूरत हो जाता है. फूहड़ता किसी भी चीज में, खासकर प्रेम में, अच्छी नहीं लगती.

प्रेम में प्रेमपत्र का इंतजार करना बहुत ही सुखद होता है. प्रेमपत्र जितना सादा हो, उतना ही कारगर साबित होता है. अपने प्यार का इजहार करने के लिए प्रेमपत्र से अच्छा कोई और सादगीभरा तरीका नहीं हो सकता.

प्रेमपत्र सहेज कर रख सकते हैं

प्रेमपत्र प्रेम करने वालों के लिए एक अनमोल चीज है, जिसे वे सालोंसाल सहेज कर रखना चाहते हैं. ये आप के प्यार को हमेशा नया बनाए रखते हैं और जब भी आप अपने बीते दिन याद करना चाहें तो आप समयसमय पर उन खतों को निकाल कर बारबार पढ़ सकते हैं और अपने प्यार की पहली पहल को याद कर सकते हैं. उस में आप के प्रेम की जो खुशबू आती है उस का मुकाबला आधुनिक तकनीक नहीं कर सकती.

प्रेमपत्र को सजा भी सकते हैं

प्यार में लाल गुलाब का एक अलग ही महत्त्व होता है. अकसर हम हमारे प्यार के इजहार के लिए इस का उपयोग अवश्य ही करते हैं इसलिए जब भी आप प्रेमपत्र लिखें, उसे आप लाल गुलाब की पंखुड़ियों से सजा सकती हैं और अपने प्यार की खुशबू उन तक पहुंचा सकती हैं, अपने प्यार को और भी महका सकती हैं.

Happy Valentine's Day

प्रेमपत्र मन की उलझन को दूर करता है

यदि आप के मन में अपने प्यार को ले कर कुछ भी शंकाएं और उलझनें हैं या कुछ बातें करने में हम हिचकिचाते या संकोच महसूस करते हैं तो प्रेमपत्र बहुत ही आसानी से दूर कर सकते हैं क्योंकि कई बार हम कुछ बातें आमनेसामने नहीं कर पाते हैं और हड़बड़ाहट में कुछ बातें करना भूल जाते हैं, तो ये आप की उलझन को दूर करने में मददगार साबित हो सकते हैं.

इस में हम अपनी सारी शंकाएं, भावनाएं आदि बहुत ही आसानी से लिख कर व्यक्त कर सकते हैं और बिना संकोच के पूछ सकते हैं.

पत्र एहसास कराते हैं हमेशा पास होने का

प्यार में इंतजार का वक्त काटे नहीं कटता. जब भी आप को उन की याद आए तो आप पढ़ें उन के लिखे हुए प्यारभरे पत्र, जो कि हमेशा ही आप को उन के पास होने का एहसास कराते रहेंगे मानो वे यहीं पास में बैठे हुए हैं.

लेकिन इंटरनैट के आने से हम पत्र लिखना भूल गए हैं. इन की जगह ईमेल ने ले ली है और हमारे पास आपस में बातचीत करने के लिए कुछ आधुनिक साधन आ गए हैं, जैसे व्हाट्सऐप और मोबाइल फोन.

यकीन मानिए जो मजा पत्र लिखने और पढ़ने में है वह ईमेल में नहीं, क्योंकि पत्र के शब्द कई बार हमारे दिल को छूने का काम करते हैं और हमारे ऊपर एक गहरा प्रभाव छोड़ते हैं. पत्रों की जगह कोई तकनीक नहीं ले सकती तो इस वैलेंटाइन डे करें अपने प्यार का इजहार एक प्यारभरा पत्र लिख कर. ●

लाइफ में क्रश के होने से जिंदगी सुहानी, रोमांटिक और रोमांचक बन जाती है, इस का एहसास सिर्फ उन्हें ही होता है जिन के जीवन में कोई न कोई क्रश होता है. क्या आप की लाइफ में है कोई क्रश?

क्रश के बिना कोई जिंदगी नहीं

लेख • शाहनवाज

किसी व्यक्ति के प्रति आकर्षित होना आम बात है. यह एहसास, खासकर, टीनऐजर्स में बहुत जल्दी पैदा होने लगता है. अपनी बिल्डिंग में, गलीमहल्ले में, सोसाइटी में, स्कूलकालेज या ट्यूशन में लड़का हो फिर चाहे लड़की, उन का किसी को मन ही मन पसंद कर लेना बहुत ही आम होता है.

लोग एकदूसरे को उन की किसी भी खूबी के लिए पसंद करने लगते हैं. फिर चाहे वह उन की खूबसूरती हो, उन की आवाज हो, उन की फिगर हो या फिर उन का एटीट्यूड. यह भावना किसी भी उम्र के लोगों में आ सकती है, सिर्फ टीनऐजर्स में ही नहीं.

अकसर लोग दिल ही दिल में एकदूसरे को पसंद करने लगते हैं, लेकिन बताने से घबराते हैं. सो, वे एकदूसरे की भावना से अनजान ही रह जाते हैं और 2 लोगों के बीच एक प्रेमभरा रिश्ता बनने से पहले ही खत्म हो जाता है.

यकीन मानिए, जब तक जीवन में क्रश होता है तब तक जिंदगी सुहानी, रोमांटिक और रोमांचक बन जाती है और इस का एहसास सिर्फ उन्हें ही होता है जिन के जीवन में कोई न कोई क्रश होता है.

- बेवजह अपने क्रश के साथ बात करने की वजह ढूंढ़ना. अगर अपने क्रश के साथ कभी बात नहीं की तो बातचीत शुरू करने के बहाने तलाशना. अपने क्रश के पास से गुजरने से दिल की धड़कनों का तेज हो जाना. अपने क्रश के पीजे (पुअर जोक्स) पर भी पेट फाड़ कर हंसने का ड्रामा करना.
- बातों ही बातों में बारबार यह पूछना कि वह सिंगल है या नहीं. जब उसे देख कर आंखों को सुकून और दिल को चैन आ जाए. जब उसे न देख सके तो उस की आवाज सुन कर दिल को तसल्ली मिल जाए. उस की हर बात को प्रोएक्टिवली (पूरी सक्रियता से) सुन कर रिस्पौंस देना.
- उन की हां में हां मिलाना. अपनी जेब में भले ही कैश का अकाल पड़ा हो लेकिन अपने क्रश को छोटेछोटे गिफ्ट्स दे कर खुश कर उस के दिल में जगह बनाने का प्रयास करना.
- सोशल मीडिया के जमाने में फेसबुक, इंस्टाग्राम इत्यादि पर उन की फोटोज पर लाइक करना. उन्हें इंप्रैस करने के लिए उन के पोस्ट पर अच्छे कमैंट्स करना. अपने क्रश के सामने आते ही नर्वस हो जाना. अपने क्रश को कोई बात बुरी न लग जाए, इसलिए उन के सामने काफी संभल कर व डरते हुए बात करना इत्यादि.

ये सभी ऐसी हरकतें होती हैं जो हर इंसान, जिस के जीवन में कोई न कोई क्रश है, जरूर करता है या फिर महसूस करता है. यदि आप की लाइफ में अभी तक कोई क्रश नहीं है तो एक बार इस का अनुभव जरूर कीजिए. यकीन मानिए, मजा बहुत आएगा और वैसे भी, क्रश के बिना भी कोई जिंदगी है क्या. ●

युवायुवतियों का सपना टू-व्हीलर

अपनी स्कूटी या बाइक होना एक युवा का सब से बड़ा ड्रीम होता है और स्मार्टफोन के बाद वही उसे दुनिया से जोड़ता है. अफसोस यह है कि देश में यूथ की संख्या तो बढ़ रही है लेकिन स्कूटी और बाइकों की बिक्री गिर रही है क्योंकि टैक्सों की भरमार की वजह से इन की लागत बहुत बढ़ गई है और पैट्रोल के दामों की इंक्रीज की वजह से इन्हें चलाना भी काफी महंगा हो गया है.

फैलते शहरों में अब यह उम्मीद करना बेकार है कि यूथ घर से स्कूल, कालेज, कोचिंग, रैस्त्रां जाने के लिए पैदल चलेंगे या खचड़ा, टूटेफूटे, बदबूदार टैंपो से जाएंगे. अगर जेब में पैसा न हो तो यह करना होगा पर सारा एक्साइटमैंट खत्म हो जाता है और जहां भी पहुंचना होता है वहां पहुंचने पर थकान और फ्रस्ट्रेशन पहले होता है, एंजौयमैंट या एजुकेशन बाद में.

सरकार अब जब नौकरियां देने में फेल हो गई है, जरूरत के हिसाब से कालेज या टैक्निकल इंस्टिट्यूट नहीं खोल पा रही तो कम से कम इतना तो करे कि यूथ के स्कूटी और बाइक खरीदने पर उसे कुछ इंसैंटिव दे. ठीक है कि यह इंसैंटिव बिगाड़ सकता है पर अगर 100 में से 50 इस का फायदा उठा कर अच्छा पढ़ लेते हैं, सही हुनर पा लेते हैं, अपने को डिप्रैशन से बचा लेते हैं तो क्या कोई हर्ज है कि यूथ इंसैंटिव, जो मुश्किल से 5–7 हजार रुपए होगा, 18 से 21 साल वालों को न दिया जा सके?

लड़कियों को तो यह और ज्यादा दिया जा सकता है. उन के लिए पिंक कलर तय किया जा सकता है और सारे टैक्स व रजिस्ट्रेशन चार्ज माफ कर के उन को एक नई ताकत दी जा सकती है. यह पैसे की बरबादी नहीं है, सरकार का छोटा सा सैक्रिफाइस है जो यूथ को नई जिंदगी दे सकता है. एक बार बिहार में लड़कियों को साइकिलें मुफ्त दी गई थीं जिस ने लड़कियों को नया आयाम दिया और उन्हें ऐसी इंडिपैंडेंस दी जो हजार किताबें और लाखों प्रवचन नहीं दे सकते.

मोबिलिटी आज पढ़ाई के साथ जरूरी है और उसे सरल बनाने में सरकार जो भी करे, वह कम है. स्कूटी और बाइक लड़केलड़कियों को सिक्योरिटी भी देते हैं और कौन्फिडैंस भी. उन के लिए पूरा शहर खुल जाता है, शहर में कहीं भी रह कर वे काम कर सकते हैं.

धर्मरूपी जहर और सत्ताधारी

धर्म को हथियार बना कर सत्ता पाने का जो सफल एक्सपैरिमैंट किया गया है उस से दोस्तों में भी किस तरह की खाई पैदा हो जाती है, इस का उदाहरण दिसंबर के अंत में हरियाणा के पलवल इलाके की एक घटना में जाहिर हुआ. इस घटना में 4 युवा दोस्त, जिन में एक मुसलिम था, एक शादी में गए और वहां पी कर अपने गांव लौटते हुए उन का एक मोबाइल को ले कर झगड़ा हो गया. जब 3 हिंदू युवकों को यह पता चला कि मोबाइल उन के मुसलिम दोस्त ने छिपाया है तो उसे दोस्ताना मामला न समझ कर उस की पिटाई यह कह कर शुरू कर दी कि वह मुसलिम है.

हिंदूमुसलिम जहर समाज में इस तरह भर डाला गया है कि 4 जने साथसाथ एक शादी में गए, वहां साथ खायापिया, साथ लौट रहे थे कि रास्ते में उन का झगड़ा हो गया तो धर्म बीच में टपक पड़ा.

धर्म के दुकानदारों ने अपनी दानदक्षिणा, अपने मंदिरों के लिए चंदा उगाहने, अपने मंदिरों में औरतों की लाइनें लगवाने के साथ आखिर में वोट हथियाने की खातिर घरघर में धर्म के जहर की बोतलें बांट दी हैं. इन का इस्तेमाल खुलेआम हो रहा है.

अभी तक केवल हिंदू और केवल मुसलिम स्कूल नहीं खुल रहे हैं और इसीलिए स्कूलोंकालेजों में हिंदूमुसलिम युवा खुल कर मिलते हैं और लड़कपन का मजाक, हंसीदिल्लगी, छेड़खानी सब करते हैं. जहां लड़कियां साथ पढ़ती हों वहां प्रेमप्रसंग और दोस्तियां भी होती हैं पर जहां जरा सी खटास हो, जिस का होना किसी भी दोस्त या सहयोगी के साथ आम बात है, वहां अचानक धर्म के जहर की दी गई बोतल खुल जाती है और एकदूसरे पर धर्म को ले कर तूतू मैंमैं होने लगती है.

यह अफसोसजनक है कि हर बच्चा चाहे या न चाहे उसे बचपन में ही धर्म का लबादा ओढ़ा दिया जाता है. बाद में वह कितनी ही कोशिश कर ले, कितना ही समझदार हो जाए, कितना ही समझ ले कि धर्म उसे बेवकूफ बना रहा है, फिर भी वह उस से निकल नहीं पाता. पलवल के इन दोस्तों के साथ यही हुआ. पलवल जिले का गांव खटाला पिछड़ा सा, कच्चे अधपक्के मकानों का गांव है जहां से चंदा भी नहीं मिलता होगा पर लड़नेमारने के लिए युवा जरूर मिल जाते हैं.

इन बेरोजगार, खाली दिमाग वाले, अनपढ़ या अनपढ़े युवाओं को धर्म का पिट्ठू बना लेना कठिन नहीं है. बजाय इस के कि आज की सरकारें इस खाई को दूर करें, हर मुख्यमंत्री, हर केंद्रीय मंत्री और मौजूदा प्रधानमंत्री तक किसी न किसी तरह हिंदूहिंदू का बखान इस तरह करते रहते हैं कि बोतलों में भरा जहर और ज्यादा जहरीला होता जा रहा है.

यह न भूलें कि यह जहर केवल मुसलिमों पर डाला जाएगा, उसे घरों में भी इस्तेमाल किया जाता है. यही औरतों को कंट्रोल करता है, यही बेटीबहन को जाति के बाहर या घरवालों की इजाजत के बिना प्रेम या शादी करने में इस्तेमाल होता है. यही जहर पिला कर मंदिरों में भेजा जाता है. इसी जहर के बल पर लड़कियों का हक लूटा जाता है. ऐसे में घर में रखी टौयलेट क्लीनर की बोतल कभी किसी के सिर पर उड़ेलने के काम में इस्तेमाल न की जाएगी, क्या गारंटी है? ●

कहानी • वीरेंद्र बहादुर सिंह

प्यार नहीं पागलपन

कवि सम्मेलन में अशोक की मुलाकात लावण्य से हुई तो फिर मुलाकातों का सिलसिला चल पड़ा लेकिन अशोक इस बात से अनजान था कि वह आगे किन परिस्थितियों में घिरने जा रहा है और वह इन सब से बाहर कैसे निकलेगा.

अति सुंदर होने और लावण्य होने में अंतर अशोक ने लावण्य को देख कर ही जाना था. ऐसा उस में कुछ भी नहीं था कि उसे देखते ही दिल धड़कने लगता. आंखें झपकना भूल जातीं या फिर दिमाग सन्न हो जाता. फिर भी वह बगल से गुजरती और एक नजर उसे देख न लेने पर अफसोस जरूर होता. उस की लयबद्ध चाल किसी मधुर संगीत की तरह दिमाग पर छा जाती थी.

वह अपने मामामामी के साथ कवि सम्मेलन में आई थी. उस दिन मंच पर अशोक ने जो कविता पढ़ी थी, उसे खूब प्रशंसा मिली थी. लोगों ने खूब तालियां बजा कर वाहवाही की थी. कवि सम्मलेन खत्म हुआ तो वह अपने मामामामी के साथ अन्य श्रोताओं की तरह अशोक को बधाई देने आई थी.

लावण्य के मामा सुधीर, जो नोएडा के जानेमाने उद्योगपति थे, अशोक के परिचित थे. वह उन से पहले भी 2–3 बार मिल चुका था.

''क्या बात है अशोकजी, आज तो आप ने कमाल ही कर दिया. क्या अद्‌भुत रचना थी?'' सुधीर ने बधाई देते हुए कहा, ''वैसे तो आप की कविता हम लोगों को भी पसंद आई, लेकिन मेरी इस भांजी को सब से अधिक पसंद आई. आओ लावण्य...''

थोड़ी दूरी पर खड़ी युवती को बुला कर सुधीर ने अशोक से परिचय कराया.

''आप की कविता बहुत अच्छी लगी, खासकर आप का गाने का अंदाज,'' लावण्य ने कहा.

लावण्य जो कह रही थी, उस में शायद अशोक को कोई रुचि नहीं थी. वह स्टेज के उजाले में लावण्य को एकटक देख रहा था. उस ने लाल चटक रंग की मिडी स्कर्ट पहन रखी थी. सफेद ड्राईक्लीन किया हुआ टौप, पतली कमर पर बंधी काली चमकती चमड़े की बैल्ट, वैसी ही काली जूती. स्कर्ट के नीचे के खुले पैरों को देख कर अंदर छिपे पैरों के आकार का अंदाजा लगाते हुए सीने पर काफी ढीले टौप पर नजरें पहुंचीं तो लड़की की सुंदरता में चारचांद लगाने वाले इसी हिस्से पर अशोक की नजरें टिकी रह गई थीं. गेहुंए रंग की लावण्य का चेहरा काफी आकर्षक था.

औपचारिक बातें खत्म हुईं तो अशोक ने कहा, ''कल हमारा एक कवि सम्मेलन और है. उसे भी सुनने आ रहे हैं न?''

''ओह, क्यों नहीं,'' सुधीर ने कहा, ''शहर में आप जिस कवि सम्मेलन में होते हैं, उसे सुनने मैं अवश्य ही जाता हूं.''

''आप भी आ रही हैं न?'' अशोक लावण्य से मुखातिब हुआ.

''जी, पक्का नहीं है,'' लावण्य होंठों ही होंठों में मुसकरा कर बोली.

''आप जरूर आइए, आज का तो विषय पर आधारित कवि सम्मेलन था. कल विशुद्ध हास्य कवि सम्मेलन है. सिर्फ हंसना है,'' अशोक ने कहा, ''आप को बड़ा मजा आएगा. इस के अलावा कल मंच का संचालन भी मैं ही करूंगा.''

''मैं पहले भी आप को सुन चुकी हूं पर बधाई देने पहली बार आई हूं.

''यह सच है. शायद आज भी न आती, पर मामा ने कहा और मैं...''

''तो क्या आप बेमन से...?'' अशोक ने सवाल किया.

''नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं है. बिना जानपहचान के...''

''शायद आप को मालूम नहीं, हम अपने श्रोताओं की तालियों, उन की वाहवाही, बधाइयों पर ही जीते हैं. आज आप आई हैं, इस का मेरे ऊपर क्या असर होगा, यह आप नहीं जान पाएंगी?'' अशोक गंभीर हो गया.

''क्या असर होगा?''

''यह आप कल देखिएगा,'' अशोक ने यह कहा, तो वहां खड़े सभी लोग हंस पड़े.

लावण्य धीरेधीरे कमर मटकाते हुए मंच से उतरने लगी. उस के नितंबों का हिलना, हवा के झोंके की तरह अशोक को स्पर्श कर गया. उस के असर से अशोक मुक्त होता, उस के पहले ही उस की नजर उस के बालों में लगे गुलाब पर पड़ी. वह उस के छोटे से जूड़े में लगा गुलाब देखता ही रह गया.

उस दिन पहली ही नजर में उसी पल लावण्य आंखों के रास्ते अशोक के दिल में बस गई थी. इस का मतलब था, अशोक को लावण्य से प्यार हो गया था.

अगले दिन लावण्य अशोक का हास्य कवि सम्मेलन सुनने आई थी. वह आगे से 5वीं लाइन में बैठी थी. अशोक ने उसे मंच पर बैठेबैठे ही खोज लिया था. उस के बाद अशोक ने अपनी जिंदगी में शायद उतना अच्छा संचालन पहले नहीं किया था. लावण्य को हंसते देख अशोक का रोमरोम रोमांचक हो उठता था.

लावण्य उस दिन भी अशोक को बधाई देने आई थी. इस मुलाकात में अशोक ने उस का फोन नंबर और पता ले लिया था. उस के बाद शहर में जहां भी कवि सम्मेलन या सैमिनार या कोई फंक्शन होता, अशोक लावण्य को फोन कर के जरूर आने के लिए कहता. कभी वह अशोक के आमंत्रण पर आ जाती तो कभी कोई जरूरी काम बता कर आने से मना कर देती. लेकिन अशोक उस से बराबर संपर्क बनाए रहा. किसी न किसी बहाने वह लावण्य को मिलने के लिए बुला ही लेता था. 6–7 महीने में अशोक उस से 10–12 बार मिला. 2 बार अशोक उसे खाने पर भी ले गया.

अशोक अपनी आमदनी का काफी बड़ा हिस्सा लावण्य को इंप्रैस करने पर खर्च कर रहा था. इतनी मुलाकातों के बाद उसे लगने लगा था कि लावण्य उस में रुचि लेने लगी थी. अब तक वे 'आप' से 'तुम' पर आ गए थे.

लावण्य मेजर विवेक की बेटी थी. उस ने जब पहली बार उसे यह बताया था, तो उसे काफी आश्चर्य हुआ था. मेजर विवेक जाति से बनिया– एक सेना का अफसर, यह अशोक की कल्पना के बाहर की बात थी.

''यह क्या कह रही हो लावण्य? तुम्हारे पिता मिस्टर विवेक जैन सेना में अफसर थे?''

''मिस्टर नहीं, मेजर... मेजर विवेक, तुम्हें इस में आश्चर्य क्यों हो रहा है?'' लावण्य ने अशोक से पूछा.

लेकिन अशोक उस से यह नहीं कह सका कि एक बनिए का सेना में अधिकारी होना उस के लिए आश्चर्य की ही बात है, क्योंकि इस तरह का कोई आदमी उसे पहली बार मिला था. उस ने कहा, ''मैं उन से मिलना चाहता हूं,'' अशोक ने यह बात लावण्य से कह तो दी, पर अंदर ही अंदर वह डर रहा था.

लावण्य के पिता सेना में थे. सेना वालों की सनक के बारे में मन ही मन वह कल्पना करने लगा था. लावण्य से अशोक ने भले ही कोई बात नहीं की थी, लेकिन मन ही मन उसे अपनी पत्नी मान लिया था. उस ने निश्चय कर लिया था कि वह लावण्य से ही शादी करेगा. झिझकते हुए उस ने पूछा, ''वे यहां नहीं रहते क्या?''

''यहीं तो रहते हैं. पिताजी के रिटायर होने के बाद हम लोग यहीं रहने आ गए थे. सालों तक तो हम सभी जगहजगह घूमते रहे. इसी वजह से मेरी पढ़ाई दिल्ली में हुई. पिताजी के रिटायर होने के बाद हम यहीं रहने लगे हैं. अब तो इस बात को भी सालों हो गए हैं. इस की वजह यह है कि हमारे ज्यादातर नातेरिश्तेदार यहीं रहते हैं.''

''तुम अपने पिताजी को अपने साथ कवि सम्मेलनों में क्यों नहीं लातीं?''

''उन्हें कविता की अपेक्षा शास्त्रीय संगीत में अधिक रुचि है. पूरे दिन तो वे अपने काम में व्यस्त रहते हैं. रिटायर होने के बाद उन्होंने 'नर्सरी' खोली है. फलोंफूलों की कलमें और पेड़ तैयार करते हैं. लैंडस्केप डिजाइन का भी काम करते हैं.''

''और तुम क्या करती हो?''

''मैं पिताजी की मदद करती हूं,'' लावण्य ने कहा.

अशोक को इंतजार था कि लावण्य उस से घर आने के लिए कहेगी पर उस ने कभी भी घर आने के लिए नहीं कहा था. अशोक ने भी उस के घर जाने या उसे अपने घर चलने का कभी आग्रह नहीं किया था. लावण्य अपनेआप समझ जाए कि अशोक उस से प्रेम करता है और यही प्रतिक्रिया उस में हो, उस पल की अशोक राह देख रहा था. इस के बावजूद अशोक को इस बात का डर जरूर था कि लावण्य उस की अपेक्षा धनी परिवार से है, जिस का अंदाजा उस ने उस के मामा से लगाया था. वैसे तो अशोक की भी स्थिति खराब नहीं थी. उस के पिताजी डाक्टर थे, जो सालभर पहले ही गुजर गए थे.

नोएडा में 400 गज के प्लौट में उस की कोठी थी. कवि बनने की सनक के कारण अशोक अपने पिता की इच्छा पूरी नहीं कर सका था, जिस बात का उसे रंज रहता था. गुजरबसर के लिए उस ने अपने 2 दोस्तों के साथ बिल्डिंग मैटीरियल्स सप्लाई एंड कंस्ट्रक्शन का काम शुरू किया था, जो बहुत अच्छा चल निकला था.

इस व्यवसाय में ज्यादा रकम अशोक की ही लगी थी. शायद इसीलिए उस के दोस्तों ने उसे कहीं भी आनेजाने की छूट दे रखी थी. धीरेधीरे अशोक को कवि के रूप में अच्छी

प्रतिष्ठा मिल गई थी, जिस से उस का पब्लिक रिलेशन भी बढ़ा था, जिस का लाभ उसे बिजनैस में भी मिल रहा था. फिर भी लावण्य के सामने उस की हैसियत कम ही थी. इसीलिए वह उस के सामने हीनभावना से ग्रस्त हो जाता था.

लावण्य के मामा सुधीर अशोक से काफी प्रभावित थे. इसलिए अशोक को विश्वास था कि जरूरत पड़ने पर परिवार के एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का उसे अवश्य सहारा मिलेगा.

मेजर विवेक से न मिलने की वजह से अशोक दुविधा में था कि वह उन्हें इंप्रैस कर पाएगा या नहीं.

एक दिन जब अशोक ने लावण्य से अगले दिन मिलने के लिए कहा तो वह बोली, ''कल तो मैं नहीं आ सकती, क्योंकि कल पिताजी का जन्मदिन है.''

अशोक ने लावण्य की इस बात को ध्यान में रख लिया था. अगले दिन ठीकठाक कपड़े पहन कर अशोक तैयार हुआ. एक बढ़िया फूलों का गुलदस्ता तैयार करवाया.

मेजर विवेक की कोठी नोएडा में सैक्टर–14 में थी. इस के अलावा दिल्ली जाने वाली सड़क पर उन का एक विशाल फार्महाउस था.

अशोक को बाद में पता चला था कि मेजर विवेक के पिता रुई के बड़े व्यापारियों में एक थे. वे रुई का आयातनिर्यात दोनों ही करते थे.

अशोक अपनी पुरानी हिलमैन गाड़ी ले कर जब लावण्य की कोठी के कंपाउंड में घुसा तो उस का दिल तेजी से धड़क रहा था.

मेजर विवेक की कोठी कुछ अलग तरह से बनी हुई थी. वैसी कोठियां भारत में बहुत कम ही बनती हैं. कोठी के विशाल बरामदे में एक तरफ झूला पड़ा था. उसी की बगल से लौन शुरू होता था. वहीं बेंत की कुरसियां और मेज पड़ी थी. लौन में तरहतरह के फूलों के साथ गुलाब के पौधों को महत्ता दी गई थी. उन्हें देख कर अशोक की समझ में आ गया था कि लावण्य के बालों में हमेशा गुलाब क्यों लगा रहता था. उन गुलाबों को देख कर अशोक को अपने हाथ में लिया गुलाबों का गुलदस्ता तुच्छ लगने लगा था. लेकिन अब वह कर ही क्या सकता था. वह वापस भी नहीं जा सकता था. लंबी सांस ले कर मन मजबूत कर के दरवाजे की घंटी बजा दी.

थोड़ी देर में मुख्य दरवाजा खुला. सफेद वरदी में सजे नौकर ने अशोक को सवालिया नजरों से देखा. अशोक ने कहा, ''मेजर साहब से मिलने आया हूं.''

''आइए,'' नौकर ने अत्यंत शिष्टता से कहा और पलट कर चलने लगा. अशोक भी उस के पीछेपीछे चल पड़ा था. इटालियन टाइल्स के सुंदर फर्श पर अशोक संभल कर कदम बढ़ा रहा था. विशाल दीवान खंड में एक तरफ ऊपर जाने की सीढ़ियां थीं. सीढ़ियों की बगल में लंबा गलियारा था. उसी गलियारे में 3 बैडरूम थे, जिन के दरवाजे बंद थे. सीढ़ियों के बाईं ओर एक बड़ा हौल था, जो आधुनिक फर्नीचर से सजा था. किसी राजमहल की छोटी प्रतिकृति लग रहा था लावण्य का घर. सुंदर कालीन के अगलबगल राजशाही सोफे, ऊंची सीलिंग वाले इस कमरे की खिड़कियों से भी लौन दिखाई दे रहा था.

अशोक कमरे की सजावट से मंत्रमुग्ध खड़ा था. सीलिंग से एक बहुत ही सुंदर झूमर लटक रहा था. यह सब देख अशोक के मन में निराशा छाने लगी थी. इस का मतलब था, मेजर विवेक बहुत ही अमीर आदमी थे. वे इतने अमीर होंगे, इस की कल्पना अशोक ने नहीं की थी. दीवारों पर लगी पेंटिंग्स भी कल्पना से परे थीं. चारों ओर ऐश्वर्य ही ऐश्वर्य झलक रहा था. यह सब देख कर लावण्य को पाने का अशोक का सपना बिखरता सा नजर आने लगा था.

नौकर अशोक को वहीं छोड़ कर मकान में ऊपर जाने वाली सीढ़ियों की बगल की गैलरी के किसी कमरे में चला गया था. वह काफी देर तक नहीं लौटा तो अशोक को लगा कि अब लावण्य आएगी या फिर उस की मां. परंतु उन दोनों के बदले वहां एक सज्जन आए, जिन्हें अशोक एकटक ताक रहा था. वे धीरेधीरे चलते हुए अशोक के पास आ गए.

अशोक ने गौर किया, उन्हें चलने में थोड़ी तकलीफ हो रही थी. उन का एक पैर मुश्किल से उठ रहा था. ढंग से कटी, सैट की हुई दाढ़ी, खड़ी मूंछें, घनी भौंहों के नीचे तेजस्वी आंखें, आधे सिर पर ढंग से संवरे काले बाल, गालों का जो भाग दाढ़ी के बालों से घिरा नहीं था, वह सेब की तरह लाल था.

मेजर विवेक का चेहरा 'सूरज' की गरमी और बर्फ की ठंडी हवाओं से रूखा हो चुका था. फिर भी बहुत सुंदर लग रहा था. इस के बावजूद एक व्यापारी की छाप उन के चेहरे पर साफ झलक रही थी.

मेजर की लंबाई लगभग अशोक के बराबर ही थी. परंतु शरीर उस से कुछ भारी था. उन्होंने लखनवी कुरतापाजामा पहन रखा था. कुरते के अंदर उन के कसे शरीर का एहसास सहज ही हो रहा था. उन के एक पैर का जूता तो सामान्य था पर दूसरे पैर का जूता कुछ बड़ा लग रहा था.

''जी?'' मेजर ने पास आ कर कहा. उस के आगे वे कुछ पूछते, अशोक ने हाथ का गुलदस्ता आगे बढ़ा कर कहा, ''हैपी बर्थडे सर.''

मेजर में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई. अशोक के गुलदस्ते को भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया. उन की बड़ीबड़ी आंखें सिकुड़ गईं. उन्होंने कहा, ''अशोक, कवि अशोक कुमार?''

''जी, जी सर,'' अशोक ने कहा, ''सर, आप मुझे...'' कह कर अशोक अगलबगल झांकने लगा कि हाथ का यह गुलदस्ता कहां रखूं.

''मैं तुम्हारे बारे में कैसे जान गया, इस पर तुम्हें आश्चर्य हो रहा है? यंगमैन आंख, कान और नाक खुला रखना भी सेना की ट्रेनिंग का एक हिस्सा है. आंख बंद कर के देखना, दीवार के पीछे की बातें सुनना, हवा से गंध का रुख जान लेना सेना के जवान की जिम्मेदारी है.

''बैठो,'' मेजर ने मुसकराते हुए कहा, ''लावण्य तो बाहर गई है.''

अशोक कुछ बेचैन हो उठा, जिसे मेजर ने तुरंत भांप लिया. उन्होंने कहा, ''रिलैक्स यंगमैन. मैं भी कभी जवान था. तुम्हें शायद लावण्य ने ही बताया होगा कि आज डैडी का जन्मदिन है.''

''जी सर, एक्चुअली मैं आप से मिलना चाहता था. मुझे लगा कि...''

''आज का यह मौका नहीं छोड़ना चाहिए,'' कह कर मेजर विवेक जोर से हंसे. अशोक झेंप गया. उन्होंने कुरते की जेब से पाइप व एक पाउच निकाला और फिर एक ऊंची कुरसी पर बैठ गए. लेकिन उन का बायां पैर सीधा ही था. पाइप में तंबाकू भर कर सुलगाई और एक लंबा कश ले कर बोले, ''तुम व्यक्तिगत रूप से आए हो, यह मुझे अच्छा लगा. वैसे मैं अपना जन्मदिन नहीं मनाता. मुझे पार्टियां पसंद नहीं हैं, यह बात नहीं है. हर आदमी को महफिल अच्छी लगती है. लेकिन जीवन और मृत्यु के बीच की रेखा जब मिट जाती है तो अस्तित्व पलपल घुटने लगता है. अच्छा बोलो, क्या लोगे?''

''आप जन्मदिन नहीं मनाते तो आज कुछ नहीं. फिर कभी आऊंगा तो...''

''लावण्य से तुम्हारी अच्छी दोस्ती है न?''

''जी सर.''

''लेकिन, तुम पहले कभी नहीं आए?''

''नहीं सर, इसीलिए मुझे लगा कि आज...''

''एक पत्थर फेंक कर दो चिड़िया उड़ाऊं... यह बात मुझे न अच्छी लगी है, न पसंद है,'' कह कर मेजर खिलखिला कर हंसे, ''मेरी भी इच्छा तुम से मिलने की थी.'' फिर उन्होंने आवाज दी, ''विद्या, अरे ओ

विद्या.'' मेजर साहब की इस आवाज पर न तो कोई आया, न ही कहीं से कोई आवाज आई. तब उन्होंने दोबारा पुकारा, ''अरे विद्या, कहां हो भई तुम?''

इस बार एक औरत साड़ी के पल्लू से हाथ पोंछते हुए लगभग दौड़ती हुई आई. उसे देखते ही मेजर ने कहा, ''जया, विद्या कहां है? उसे जा कर भेजो तो...''

जया को देख कर लगा कि वह किचन में खाना बना रही थी. उस ने अशोक पर एक नजर डाल कर मेजर को जवाब दिया, ''वे तो नहा रही हैं.''

''ओह, कितनी देर हो गई. अभी तक नहा ही रही है.''

''अभीअभी तो गई हैं सर.''

मेजर ने अशोक की ओर देख कर कहा, ''अब तो कम से कम एक घंटा लगेगा उसे नहाने में. मैं चाहे जितना चिल्लाऊं, वह निकलने वाली नहीं है. तुम्हें घंटेभर बैठाया भी नहीं जा सकता. लेकिन यदि तुम्हारे पास समय हो तो विद्या के नहा कर निकलने तक हम बैठ कर शतरंज खेल सकते हैं.''

''आप भी सर. आप को नर्सरी भी तो जाना है. आप का समय हो गया है.''

''अरे हां, अच्छा हुआ जया कि तुम ने याद दिला दिया,'' कह कर मेजर ने घड़ी देखी, ''जया, तुम ने इन्हें पहचाना? ये अशोक हैं, अशोक कुमार. अपनी लावण्य के बहुत अच्छे दोस्त हैं. लावण्य बता रही थी कि ये कविताएं बहुत अच्छी लिखते हैं और पढ़ते भी हैं. ये टीवी पर भी आते हैं, इसीलिए तो मैं कह रहा था कि विद्या भी इन से मिल लेती तो...''

''भाईसाहब, आप फिर कभी आइएगा,'' जया ने अशोक से कहा और उसे जाने का इस तरह इशारा किया, जिसे मेजर नहीं देख पाए.

अशोक चौंका भी और कुछ विचलित भी हुआ. जया फिर बोली, ''आप कभी शाम को आइए.''

''आज की मुलाकात मजेदार नहीं रही,'' मेजर ने कहा, ''आप फिर कभी आइए.''

''ऐसा ही करना परंतु जब भी आना फोन कर के आना,'' जया ने जाने का इशारा करते हुए कहा. मेजर की नजरें बचा कर एक बार फिर जाने का इशारा किया.

अशोक उठ कर खड़ा हो गया.

''ठीक है, मेरी इच्छा है कि तुम विद्या से जरूर मिलो. लेकिन वह बहुत व्यस्त रहती है. आजकल उस ने नर्सरी में सूरजमुखी के बीज बो रखे हैं.

''यदि तुम फोन कर के आओगे तो अच्छा रहेगा.''

''फिर आना भाई,'' जया ने लगभग अशोक को विदा करते हुए कहा.

मेजर विवेक से अशोक की यह पहली मुलाकात थी.

अगले दिन लावण्य अशोक से मिलने आई तो थोड़ा तल्खी से बोली, ''यदि तुम्हें मेरे यहां आना था तो मुझे बता दिया होता.''

''सच बताऊं लावण्य, मुझे लगा कि तुम्हारे डैडी का जन्मदिन है, इसलिए उन से मिलने का यही सब से बढ़िया मौका है. मैं ऐसे ही मौके की तलाश में था परंतु तुम कहां चली गई थीं? अपने डैडी के जन्मदिन पर तुम, तुम्हारी मम्मी और पापा घर में ही होंगे, यही सोच कर मैं गया था,'' अशोक ने सफाई दी.

''मेरे डैडी जन्मदिन नहीं मनाते,'' लावण्य बोली, ''सालों पहले मेरे डैडी के जन्मदिन पर एक बहुत ही दुखद घटना घट गई थी. यह तब की बात है, जब भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध हो रहा था. जन्मदिन पर युद्ध क्षेत्र में बने कैंप में मेरे डैडी के नीचे के अफसर उन्हें जन्मदिन की बधाई देने आए थे. ब्रैड पर चीनी रख कर डैडी ने सब का मुंह मीठा कराया. सभी चाय पी रहे थे कि कैंप पर एक बम आ गिरा. उस में 4 अफसर और 20 सिपाही मारे गए थे. डैडी का भी एक पैर उसी बम विस्फोट में उड़ गया था. स्वयं के घायल होने से ज्यादा आघात उन्हें अपने साथियों की मौत का लगा था,'' लावण्य ने यह बात बड़ी सरलता से कही थी परंतु उस का रंज, उस की संवेदना मेजर विवेक, उन की पत्नी और लावण्य के लिए कितना गहरा होगा, इस की कल्पना अशोक आसानी से कर सकता था.

''मुझे यह नहीं मालूम था लावण्य, नहीं तो मैं तुम्हारे घर कतई न जाता,'' अशोक ने दुख व्यक्त किया. उस ने देखा कि लावण्य के चेहरे पर दुख की छाया स्पष्ट झलक रही थी. इसलिए उस ने उस छाया को हटाने के लिए कहा, ''जीवन में जिस किसी के भी साथ इस तरह की दुखद घटना घटेगी, वह भला अपना जन्मदिन कैसे मना पाएगा. आई फील सौरी डियर... मैं ऐसा सोच भी नहीं सकता था,'' कहते हुए अशोक लावण्य का हाथ थाम कर आगे बढ़ा.

लावण्य स्कौर्पियो जीप चलाती थी. अशोक लावण्य का हाथ थामे स्कौर्पियो के पास तक पहुंचा. फिर उसी में बैठ कर दोनों महरौली के एक रैस्टोरैंट में गए, जहां एक कोने की मेज पर दोनों जा बैठे.

''तुम्हारे डैडी तो मेरा नाम भी जानते हैं. वे जैसे ही कमरे में आए थे, मेरे दिल की धड़कन बढ़ गई थी. लेकिन उन्होंने तो मुझ से बड़े प्रेम से बात की. लगता है, तुम ने मेरी उन से खूब तारीफ की है.''

''हूं.'' लावण्य बोली.

''आई थिंक, मेरी उन पर अच्छी छाप पड़ी है. तुम ने क्या कहा था मेरे बारे में उन से?'' अशोक ने पूछा.

''वे तुम्हारी खूब तारीफ कर रहे थे.''

''रियली,'' अशोक थोड़ा उत्साह से बोला, ''बस एक बार तुम्हारी मम्मी से मिल लूं, फिर...''

''फिर क्या?'' लावण्य चौंक कर बोली.

''फिर क्या... बस...'' अशोक हिचका. फिर वह एकाएक लावण्य का हाथ थाम कर बोला, ''लावण्य, मैं तुम से शादी करना चाहता हूं. मैं तुम से बहुत प्यार करता हूं. इसलिए मैं सोचता था कि तुम्हारे डैडी फौजी आदमी हैं, फिर पैसे वाले भी हैं. मैं उन्हें पसंद आऊंगा कि नहीं? इस के अलावा एक डर यह भी है कि तुम्हारे परिवार वाले मुझे स्वीकार करेंगे या नहीं?''

''तुम ने इस बारे में मेरी राय नहीं ली अशोक?''

''तुम इनकार नहीं करोगी.''

''क्यों?''

''क्योंकि, मैं तुम्हारे अंदर तक देख सकता हूं. तुम्हारे मम्मीडैडी हां कर दें, यही मेरे लिए महत्त्वपूर्ण है परंतु तुम्हारी मम्मी से तो अभी मैं मिला ही नहीं. तुम्हारे घर में यह जया कौन है?'' अशोक ने पूछा.

''जया...'' लावण्य जैसे नींद से जागी हो, इस तरह बोली, ''ओह जया, वे तो हमारे यहां सालों से काम कर रही हैं. सच बात तो यह है कि उन्होंने ही मुझे पालपोस कर बड़ा किया है.''

''इसीलिए आप के घर में उन का खासा वर्चस्व है. तुम्हारे डैडी मुझे बैठाना चाहते थे. तुम्हारी मम्मी नहाने गई थीं. मेजर साहब ने कहा भी कि जब तक वे न आ जाएं, रुको परंतु जया आंटी ने मुझे जाने का इशारा किया,'' अशोक ने कहा, ''उस वक्त मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं मेजर साहब का कहना मानूं या जया आंटी का. फिर मैं वहां नहीं रुका. लेकिन आज मैं तुम्हारे साथ चल कर तुम्हारी मां से जरूर मिलूंगा.''

''अशोक,'' लावण्य बोली. फिर मेज पर रखी नमक की शीशी को घुमाते हुए जैसे कहीं खो गई. उस के बाद एक लंबी सांस ले कर बोली, ''अशोक, मेरी मम्मी तो 2 साल पहले ही गुजर गई हैं.''

''तो फिर,'' अशोक ने हिचकते हुए पूछा, ''ये विद्या कौन हैं?''

''मेरी मम्मी.''

''तुम्हारी मम्मी? आई मीन सौतेली मम्मी,'' अशोक ने कहा.

''नहीं, मेरी सगी मां,'' लावण्य ने झटके से सिर घुमाते हुए कहा. फिर उस ने दोनों होंठ भींच लिए. शायद उसे रुलाई आ गई थी, जिसे दबाने का वह प्रयास कर रही थी.

''सौरी, मैं समझ नहीं पाया लावण्य,'' अशोक ने दुखी हो कर कहा.

''वे मर गई हैं.''

''तो फिर मेजर साहब ने... आई मीन, उन्होंने बारबार आवाज क्यों लगाई थी? जया आंटी ने भी आ कर कहा था कि वे नहा रही हैं. वे स्नान कर के निकलें, तब तक मेजर साहब मुझ से रुकने के लिए कह रहे थे. फिर शतरंज खेलने के लिए भी कहा था.''

लावण्य की आंखों से निकली आंसू की बूंदें गालों पर आ गई थीं.

''ए फेक बिलीव.''

''मतलब?''

''भ्रम की दुनिया. मेरे डैडी भ्रम की दुनिया में जी रहे हैं. उन्हें कैसे समझाऊं कि मम्मी को गुजरे 2 साल हो गए हैं. लेकिन कभीकभी डैडी ऐसा बरताव करते हैं, जैसे मम्मी अभी जिंदा हैं,'' लावण्य बोली.

सच बात तो यह थी कि लावण्य की ये बातें अशोक की समझ में नहीं आई थीं. वह आश्चर्य से बोला, ''लावण्य, तुम कहना क्या चाहती हो?''

''डैडी मानसिक रूप से बीमार हैं. मम्मी मर चुकी हैं, यह बात वे मानने को तैयार नहीं हैं.''

''वे मानसिक रूप से बीमार हैं, परंतु वे तो मुझ से कितनी अच्छी तरह बातें कर रहे थे?''

''वह सब तो ठीक है, परंतु अचानक वे न जाने कहां खो जाते हैं. अचानक वे ऐसा व्यवहार करने लगते हैं, जैसे मम्मी जिंदा हों,''

लावण्य लंबीलंबी सांसें ले कर ये बातें कह रही थी. अशोक विस्मय से उस का मुंह ताक रहा था. शायद उसे लावण्य की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था, क्योंकि मेजर विवेक ने उस से एक स्वस्थ व्यक्ति की तरह बातें की थीं. लावण्य आगे बोली, ''डैडी जब भी इस तरह का व्यवहार करते हैं, हम किसी न किसी बहाने से उन्हें मना लेते हैं. जया आंटी इस मामले में मुझ से अधिक होशियार हैं.''

''शायद, इसीलिए उन्होंने मुझे वहां से जाने का इशारा किया था?''

''एक बार डैडी को मम्मी की याद आ जाए तो उन्हें समझाना बहुत मुश्किल हो जाता है. लेकिन जब वे किसी काम में लगे रहते हैं तो कोई परेशानी नहीं होती.''

''मम्मी की मृत्यु का शायद उन्हें गहरा आघात लगा है, लावण्य.''

''आघात तो मुझे भी उतना ही लगा था. 2 दिनों की ही बीमारी में मम्मी की मृत्यु हो गई थीं. उन्हें अचानक हार्टअटैक हुआ था. हम कितने सुखी थे. डैडी का पैर कटने के बाद वे रिटायर हो गए थे. फिर हम यहां रहने आ गए थे. सालों तक हम इधरउधर घूमते रहे थे. मैं पहले तो इधरउधर उन्हीं के साथ भटकती रही, फिर दिल्ली में पढ़ाई पूरी की. मैं, मम्मी ज्यादातर डैडी के साथ कैंटोनमैंट में ही रहीं. डैडी को कहीं भी ड्यूटी पर जाना होता था, तभी दोनों अलग होते थे. फिर जब मिलते थे तो नवविवाहिता दंपती की तरह व्यवहार करते थे. मेरी मम्मी बहुत ही खुशमिजाज थीं. बाहरी जिंदगी उन्हें अधिक पसंद थी. मेरी मां वैष्णव बनिए की बेटी थीं. डैडी और मम्मी बचपन के दोस्त थे. डैडी जैसा आज दिखाई देते हैं, पहले वैसे नहीं थे. सौफ्ट, जैंटल और नाजुक. मेरी मां को मर्दानगी पसंद थी. वार फिल्म्स और वैंचर्स देखना उन्हें अधिक पसंद था.

वे बचपन से ही कहती थीं, 'मैं किसी सैनिक से ही शादी करूंगी.' अशोक, मेरे डैडी सिर्फ इसीलिए सेना में गए थे, जिस से वे विद्या यानी मेरी मम्मी से शादी कर सकें. वे मेरी मम्मी के सपनों का राजकुमार बन कर उन की जिंदगी में वापस आए थे. सैकंड लैफ्टिनैंट का कमीशन ले कर आने पर मेरी मम्मी को उन पर गर्व हुआ था. यूनिफौर्म का गर्व मेरे डैडी को था तो डैडी पर मेरी मम्मी को गर्व था.

''कभीकभी तो उन दोनों के प्यार को देख कर मुझे ही ईर्ष्या होने लगती थी. मम्मी जैसी खूबसूरत स्त्री मैं ने आज तक नहीं देखी है,'' लावण्य बोली.

अशोक भी कहना चाहता था कि उस जैसी सुंदर, लावण्यमयी स्त्री उस ने भी नहीं देखी परंतु कह नहीं सका. तभी लावण्य ने अपनी बगल वाली कुरसी पर रखा अपना पर्स उठाया और उस में से पोस्टकार्ड साइज का एक फोटो निकाल कर अशोक के हाथ में रख दिया. अशोक ने किसी पत्रिका की कवरगर्ल जितनी सुंदर उस तसवीर को देखा. वह जिस भी औरत की तसवीर थी, सचमुच वह बहुत सुंदर थी. लावण्य की बात में कोई अतिशयोक्ति नहीं थी.

''इस तसवीर से भी अधिक वह सुंदर थीं. यस, मोर ब्यूटीफुल दैन दिस पिक्चर. मेरे डैडी, बस, उन्हें प्रेम करते थे, अनर्गल प्रेम, नितांत अतिशयोक्तिभरा प्रेम,'' इतना कह कर लावण्य शांत हो गई.

अशोक उस दिन लावण्य के साथ काफी देर तक बैठा रहा. दोनों ने साथसाथ खाना भी खाया. दोदो कप चाय भी पी ली थी. दोनों अलग हुए तो उस पर दुख की छाया थी, पर उस दुख में एक नया तत्त्व मिला था, अपनत्व का. अब उन्हें एकदूसरे से कहने की जरूरत नहीं थी कि वे एकदूसरे को प्यार करते हैं.

अशोक और लावण्य की दोस्ती प्रेम में बदल गई थी. अशोक ने लावण्य का परिचय अपने घर वालों से करा दिया था. अशोक के पिता शहर के जानेमाने डाक्टर थे. अशोक घर में सब से छोटा था. बड़ा भाई पिता की तरह डाक्टर हो गया था. बड़ी बहन भी गायनीकोलौजिस्ट थी और डाक्टर से शादी की थी. बड़े भाई और भाभी ने अपना अस्पताल बना लिया था. अशोक अपनी मां के साथ रहता था. लेकिन हर रविवार को निश्चितरूप से पूरा परिवार इकट्ठा होता था और दोनों समय का खाना एकसाथ खाता था.

लावण्य अशोक का परिवार देख कर बहुत खुश हुई थी. अशोक के घर वाले समझ गए थे कि उस ने लावण्य को उन से क्यों मिलवाया है. वह अशोक की जिंदगी का सब से खुशी का दिन था.

उस दिन अशोक लावण्य को उस के घर पहुंचाने गया था. जैसे ही लावण्य और अशोक घर में दाखिल हुए, जया आंटी रसोई से भागती हुई आईं, ''लावण्य, साहब अभी तक नहीं आए हैं.''

''कहां गए हैं?''

''रणजीत मामा के यहां गए थे. उन का फोन था. तुम जा कर उन्हें ले आओ बेटा.''

''कब गए थे?''

''4 घंटे हो गए हैं. उन्होंने खाना भी नहीं खाया है.''

''ओके आंटी, आप चिंता मत कीजिए,'' लावण्य ने कहा, ''मैं अभी देखती हूं.''

''मैं भी तुम्हारे साथ चलूं?'' जया ने पूछा.

''नहीं, मैं पहले फोन पर बात कर लेती हूं,'' कह कर लावण्य ने फोन लगाया. फोन उस की मामी ने उठाया. थोड़ी देर बाद फोन पर मेजर विवेक आए.

लावण्य बोली, ''हैलो डैडी.''

''लावण्य?'' उस के डैडी ने पूछा.

''मैं कितनी देर से आप का इंतजार कर रही हूं,'' लावण्य ने कहा.

''अरे भई, मैं तुम्हारी मम्मी को लिए बगैर कैसे आ जाऊं. वे डौली को ले कर बाहर गई हैं. अभी तक लौटी नहीं हैं,'' मेजर ने कहा, ''वे वहां तो नहीं चली गई हैं?''

''नहीं डैडी, डौली को तो वे नोएडा में ही छोड़ आई हैं,'' लावण्य बोली.

''पर, उन्हें वहां पहुंच कर मुझे फोन तो करना चाहिए था,'' वे बोले.

''डैडी, अब आप तुरंत यहां आ जाइए.''

''तुम अपनी मम्मी को फोन दो.''

''डैडी, वे आप से नाराज हैं. वे फोन पर नहीं आएंगी.''

''तुम उस से कह दो कि वह फोन पर नहीं आएगी तो मैं उस से बात नहीं करूंगा.''

''यह आप ही आ कर कह दीजिएगा. मैं आप लोगों के बीच में क्यों पड़ूं,'' लावण्य ने कहा और फोन रख दिया.

अशोक चुप खड़ा आश्चर्य से उन की बातें सुन रहा था. लावण्य ने एक लंबी सांस ले कर कहा, ''क्या करूं, डैडी का. उन का यह रवैया धीरेधीरे बढ़ता ही जा रहा है. आजकल वे जहां भी जाते हैं, ऐसा ही करते हैं. कल डाक्टर संजय के अस्पताल पहुंच गए थे. मम्मी को वहां आईसीयू में रखा गया था. वे वहां से आ ही नहीं रहे थे. मैं जा कर उन्हें किसी तरह घर लाई थी. यह तो अच्छा है कि डाक्टर संजय उन के पुराने दोस्त हैं. मैं यह सब करते अब थक गई हूं.''

अशोक ने लावण्य के सिर पर हाथ रख कर कहा, ''रिलैक्स डियर.''

अशोक ने लावण्य को सांत्वना देने का प्रयास किया. 15 मिनट बाद मेजर विवेक घर आ गए. घर में घुसते ही वे बोले, ''अरे अशोक, तुम?''

''आप से मिलने के लिए कब से बैठा हूं सर,'' अशोक ने कहा.

''अच्छा,'' उन्होंने मुसकराते हुए कहा, ''आओ, आओ, आज सुबह से ही मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा था. रणजीत को तो तुम जानते हो न?''

''जी सर, मामा, आई मीन, लावण्य के मामा.''

''आप का खाना लगाऊं डैडी?'' लावण्य बीच में बोली.

''खाना?'' उन्होंने घड़ी देख कर कहा, ''ओह, पौने 9 बज गए हैं. यस, अब तो खाना खा ही लेना चाहिए. अशोक, तुम भी खा लो.''

''नहीं सर, मैं अभीअभी घर से खा कर, आई मीन नाश्ता कर के आया हूं.''

''आज मैं अशोक के घर गई थी डैडी.''

''अरे वाह तो मुझे भी अपने साथ ले चलना था.''

''सर, आप जब कहें तब आप को अपने घर ले चलूं,'' अशोक ने कहा. तब तक जया और एक नौकर ने खाना ला कर झट से लगा दिया.

''आप हाथ धो लीजिए डैडी,'' लावण्य बोली. मेजर मुसकराते हुए बाथरूम की ओर बढ़े.

''अशोक, अकसर ऐसा ही होता है. अच्छा हुआ कि तुम घर में थे. तुम्हें देख कर वे मम्मी को भूल गए. उन के खाने तक तो तुम रुकोगे न, अशोक?''

''क्यों नहीं?'' अशोक ने कहा तो लावण्य जया आंटी की मदद करने चली गई.

''कम औन यंगमैन,'' मेजर ने कहा. फिर सब लोग टेबल पर बैठ गए. जया खाना परोसने लगी, तभी मेजर ने कहा, ''जया, गुलाबजामुन खत्म हो गए क्या?''

''हैं न सर.''

''तो फिर लाओ न.''

जया ने गुलाबजामुन का कटोरा ला कर रखा तो मेजर साहब ने उसे अशोक की ओर खिसका दिया.

''अशोक, आज मैं एक गंभीर चिंता में था.''

''कैसी चिंता सर?''

''लावण्य को ले कर, तुम्हें तो पता है?'' उन्होंने हंस कर कहा.

''मैं समझा नहीं सर?''

''आज रणजीत मिलने आया था.''

''रणजीत मामा?'' लावण्य ने पूछा, ''कब?''

''सवेरे, यू नो, जानती हो किसलिए आए थे?''

''नहीं डैडी.''

''तुम बड़ी चालाक हो गई हो लावण्य. अभी तक तो तुम मुझ से सारी बातें बता देती थीं, परंतु अब कुछ नहीं बताती हो.''

''डैडी, ऐसी कोई बात नहीं है. मैं ने कभी आप से कोई बात नहीं छिपायी है.''

''छिपाई है न,'' मेजर ने हंसते हुए अशोक की ओर देख कर कहा, ''अशोक छिपाई है कि नहीं, तुम्हारा क्या कहना है?''

''सर, मैं क्या कहूं? मुझे पता ही नहीं कि इस ने कौन सी बात छिपाई है. लेकिन, मैं ने आप से जरूर एक बात छिपाई है,'' अशोक ने कहा.

''एट लीस्ट, भई तुम ईमानदार आदमी हो. आई लाइक दैट,'' मेजर विवेक ने कहा, ''अब बोलो, कौन सी बात छिपाई है.''

''आप नाराज तो नहीं होंगे?''

''बिलकुल नहीं.''

''प्रौमिस सर. ए सोल्जर्स प्रौमिस...'' अशोक ने कहा.

''यस, ए सोल्जर्स प्रौमिस,'' मेजर ने कहा.

अशोक नैपकिन में हाथ पोंछते हुए अपनी जगह से उठा और मेजर विवेक के पास आ कर बोला, ''सर, मैं आप की बेटी लावण्य से प्यार करता हूं. मैं इस से शादी करना चाहता हूं.''

मेजर विवेक एकटक अशोक को ताकने लगे. एकदो पल बीते. लावण्य अपना कौर हाथ में लिए बैठी रह गई थी. सभी एकदम खामोश रह गए थे. मेजर ने छूटते ही कहा, ''आई लाइक दैट. यानी तुम मेरी

बेटी से विवाह के लिए अनुमति मांग रहे हो अशोक?''

''जी सर, अनुमति और आशीर्वाद.''

''और यदि मैं इनकार कर दूं, तो...''

''तो, तो सर,'' अशोक हड़बड़ाया. उस की समझ में यह नहीं आया कि यह मजाक हो रहा है या सीरियस बात चल रही है.

''बोलो, बोलो. चुप क्यों हो गए.''

''सर, इस का जवाब लंबा है.''

''पर बोलो.''

''सर, आप लावण्य की इच्छा नहीं जानेंगे? यदि उस ने हां कर दिया, तब भी आप इनकार कर देंगे?''

''इस तरह की तमाम घटनाएं सामने आई हैं.''

''तब तो सर मुझे झगड़ा करना पड़ेगा.''

''निश्चित.''

''जी सर,'' अशोक बोला.

मेजर विवेक ने अशोक का हाथ पकड़ कर कहा, ''तुम्हें पता है, मेरी जिंदगी में भी कुछ ऐसा ही घटा था. यू नो विद्या.''

मेजर विवेक के इतना कहते ही लावण्य का थाली में रखा हाथ वैसा ही रखा रहा. जया भी गरम रोटी लिए खड़ी रह गई.

अशोक ने दोनों के रिऐक्शन को गौर से देखा. वहां किसी नाटक की भांति गंभीर सीन जैसा माहौल बन गया था. मम्मी का नाम आते ही लावण्य के चेहरे पर भय स्पष्ट झलक रहा था.

अशोक सभी को बारीबारी से देख रहा था. मेजर विवेक ने कहा, ''विद्या को मैं बचपन से ही चाहता था. मैट्रिक तक हम दोनों साथसाथ पढ़े थे. उस ने मुझ से कहा था कि वह शादी सिर्फ सेना के अफसर से ही करेगी. फिर उस के लिए मैं सेना में अफसर हो गया.

''जानते हो, मेरा पहला सैन्य मिशन क्या था? मैं छुट्टी ले कर सीधे दिल्ली आया. स्टेशन से उतर कर सीधे विद्या के घर पहुंचा.

''मैं उस समय पूरी वरदी में था. सीधे जा कर विद्या के पिताजी के सामने खड़ा हो गया. उस के पिता भले आदमी थे. विद्या के दोनों भाई रणजीत और अजित मुझे ताक रहे थे. उस के पिता कुछ कह नहीं सके. मैं ने अंत में कहा, ''आप सोचविचार कर जवाब दीजिएगा. विद्या से भी पूछ लीजिएगा. शादी की मुझे जल्दी नहीं है. लेकिन मैं शादी विद्या से ही करूंगा.''

''मुझे विद्या से पूछना तो पड़ेगा ही,'' थोड़ा घबरा कर उस के पिता बोले थे.

''औफकोर्स. और हां, यदि उस ने हां कर दी तो मैं पूरी फौज ले कर उस से शादी करने आऊंगा. आऊंगा यह निश्चित है,'' इतना कह कर मेजर साहब खूब हंसे थे.

''सर, मेरे पास फौज तो नहीं है, पर मैं भी आऊंगा जरूर, अकेला,'' अशोक ने कहा, तो मेजर साहब ने उस की पीठ थपथपाई.

''तो सर, आप की तरफ से हां है?'' अशोक ने पूछा परंतु उसे तुरंत लगा कि उस ने यह गलत सवाल कर दिया है.

''मैं तो इस मामले में स्वतंत्र विचारों वाला हूं. विद्या भी मेरे जैसी है परंतु उस से पूछना तो पड़ेगा ही न. उसे लावण्य की शादी करने, फिर नानी बनने का बहुत शौक है. जया, जरा विद्या को बुलाओ तो.''

''डैडी, अब आप खाना खा लीजिए.''

''पहले तुम विद्या को तो बुलाओ. लगता है, आज मांबेटी में फिर झगड़ा हुआ है? इसीलिए आज वह खाने की टेबल पर भी नहीं आई.

लावण्य, मैं ने तुम्हें कितनी बार समझाया है कि तुम अपनी मम्मी से झगड़ा मत किया करो,'' फिर वे अशोक से मुखातिब होते हुए बोले, ''लगता है, तुम ने आज ही विद्या से शादी के बारे में पूछा है.''

अशोक भला क्या जवाब देता. वह चुपचाप मेजर विवेक का मुंह ताकता रहा. मेजर विवेक आगे बोले, ''तुम ने क्या पूछा था? तुम्हें सीधे उस से बात नहीं करनी चाहिए थी अशोक. वह तो अपनी बेटी की भी शादी सेना के ही अफसर से करना चाहती है पर ऐसा नहीं होगा. तुम चिंता मत करो, मैं उस से बात करूंगा.''

''डैडी, आप खाना खाइए न.''

''लेकिन, मैं विद्या से बात करना चाहता हूं. मुझे पता तो चले कि वह कैसी है?'' कह कर मेजर विवेक खड़े हो गए. हाथ धोए बगैर ही वे 'विद्या... नाऊ कम औन... विद्या...' आवाज देते हुए बैडरूम की ओर चल पड़े.

लावण्य ने जल्दी से नैपकिन से हाथ पोंछे और मेजर साहब के पीछेपीछे भागी. अब तक मेजर विवेक अपने बैडरूम के दरवाजे पर पहुंच गए थे. वे दरवाजे पर ही खड़े हो कर कहने लगे, ''विद्या कम औन... गेटअप... तुम भी बहुत जिद्दी हो. तुम अशोक से बात तो करो.''

''डैडी,'' लावण्य मेजर विवेक के पीछे से बोली, ''डैडी, शी इज नो मोर. डैडी, वे तो कब की मर चुकी हैं.''

''ह्वाट? विद्या मर गई है? लावण्य, तू यह क्या कह रही है? वह तो सो रही है. बेटा, मम्मी से झगड़ा कर के ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए.''

''डैडी, प्लीज डैडी. वे कहां सोई हैं. यह देखो न. यहां है कोई भला?'' तकियाचद्दर फेंकते हुए लावण्य ने कहा, ''यहां कहां हैं विद्या? डैडी, आप समझते क्यों नहीं? अचानक आप को यह क्या हो जाता है? आप कब तक ऐसा करते रहेंगे? डैडी, मम्मी मर गई हैं. वे हम लोगों को हमेशा के लिए छोड़ कर चली गई हैं, हमेशा के लिए,'' इतना कहतेकहते लावण्य रो पड़ी. अशोक भी पीछेपीछे वहां पहुंच गया था और जया भी.

मेजर स्तब्ध खड़े थे. वे फुसफुसाते हुए बोले, ''बेटा, वह मरी नहीं है. तुम्हारा दिमाग ठीक नहीं है. वह देखो न सोई है. अभीअभी सोई है. मैं ने उसे देखा है.''

''तो फिर वे कहां गईं डैडी,'' लावण्य बोली, ''आप ही बताइए न, वे कहां गईं?'' इतना कह कर लावण्य ने जोरजोर से रोते हुए अपने डैडी के कंधे पर सिर रख दिया. फिर धीरेधीरे चलते हुए वह मेजर विवेक को कमरे से बाहर ले आई. उस के बाद उन्हें सीढ़ियों के पास छोड़ कर अपने कमरे की ओर भागी. मेजर विवेक शून्य में ताकते वहीं खड़े रहे. अशोक भी चुपचाप वहीं खड़ा था. मेजर ने कुछ कहना चाहा, पर कह न सके.

धीरेधीरे चलते हुए वे डाइनिंग टेबल के पास आ कर खड़े हो गए. अशोक खुद को बड़ी विकट परिस्थिति में फंसा हुआ महसूस कर रहा था. उस की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे.

''आप जाइए भैया,'' जया ने अशोक के नजदीक आ कर कहा, ''लावण्य अब नीचे नहीं आएगी.''

फिर बुदबुदाते हुए वह रसोई की ओर चली गई.

उस रात अशोक बिलकुल नहीं सो सका. अगले दिन सुबह होते ही वह लावण्य के यहां पहुंच गया. तब तक लावण्य सो ही रही थी.

मेजर विवेक लौन में थे. सबकुछ नौर्मल लग रहा था. लावण्य सो रही थी, इसलिए वह उस से बिना मिले ही लौट गया था. फिर 2 दिन बाद ही अशोक लावण्य के यहां जा सका था. इस बीच उस ने फोन भी नहीं किया. अशोक से मिलने पर लावण्य बोली, ''आई एम सौरी अशोक.''

''डैडी सचमुच अस्वस्थ हैं लावण्य.''

''परंतु, उन की बीमारी का कोई निदान नहीं है,'' लावण्य गंभीरता से बोली.

''डाक्टर... मेरे कहने का मतलब, उन के दोस्त डाक्टर संजय क्या कहते हैं?''

''वे भी बड़े असमंजस में हैं. डैडी की मैमोरी अचानक लुप्त हो जाती है. फिर एकाएक उन्हें मम्मी की प्रेजैंस का खयाल आता है. रोजाना दिन में 1–2 बार तो वे मम्मी को पुकार ही लेते हैं. अब तो उन्हें समझाने के हमारे पास बहाने भी खत्म हो गए हैं.''

''हमें कुछ तो करना ही होगा,'' अशोक बोला.

''मैं सारे प्रयत्न कर चुकी हूं. वे अचानक ऐसा व्यवहार करने लगते हैं कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि वे ऐसा करते होंगे. कभीकभी तो मुझे भी लगता है कि मम्मी सचमुच घर में घूम रही हैं... दरअसल, वे डैडी को इतना प्यार करती थीं कि अपने प्यार के बीच वे मुझे भी नहीं सहन कर सकती थीं. सी वांटेड टु पजेस हिम... पजेस हिम फौर गुड,'' लावण्य बोली.

लावण्य की बातें सुन कर अशोक सोच में पड़ गया. भूतप्रेत में वह विश्वास नहीं करता था. फिर भी पलभर के लिए उसे लगा कि शायद सचमुच मेजर अपनी मृत पत्नी के अपार्थिव शरीर को देखते होंगे.

''अशोक, मुझे बहुत डर लगता है. मैं सोचती हूं कि शादी कर लूंगी तो डैडी का खयाल कौन रखेगा?''

''शादी के बाद उन का खयाल हम दोनों रखेंगे और कौन रखेगा?'' अशोक ने कहा.

''मैं उन्हें छोड़ कर नहीं जा सकती अशोक.''

''आई कैन अंडरस्टैंड डियर,'' अशोक बोला.

मेजर विवेक की स्थिति दिनोंदिन गंभीर होती जा रही थी. कभी भी, किसी भी समय वे ससुराल पहुंच जाते. विद्या की सहेलियों के यहां पहुंच जाते. बस, उन का एक ही सवाल होता, ''यहां विद्या आई है क्या?''

मेजर विवेक के बारे में लगभग सभी लोग जान गए थे, इसलिए सब बड़े धैर्य से जवाब देते, 'आई तो थी, लेकिन थोड़ी देर पहले चली गई.'

सभी को मेजर साहब से सहानुभूति थी. लोग उन्हें बैठाते, चायनाश्ता भी कराते. फिर मेजर विवेक उठते हुए कहते, 'चलूं, विद्या मेरा इंतजार कर रही होगी.'

अपनी नर्सरी में भी मेजर विवेक विद्या को ही ले कर बड़बड़ाते रहते. लावण्य उन के पीछेपीछे भागती रहती. मेजर विवेक की बिगड़ती स्थिति के कारण ही लावण्य और अशोक का विवाह टलता जा रहा था.

अशोक जब भी लावण्य से शादी की बात करता तो वह एक ही बात कहती, ''अशोक, मैं डैडी को इस हालत में कैसे छोड़ सकती हूं. मैं अभी शादी नहीं कर सकती.''

उधर अशोक की मां बारबार उस से शादी के बारे में पूछती रहती थी. वह मां को समझा नहीं पा रहा था कि मामला क्या है. आखिर रणजीत और डा. संजय ने भी लावण्य से कहा, ''लावण्य, तुम कब तक इंतजार करोगी. मेजर साहब की हालत सुधरने वाली नहीं है.''

''नहीं मामा, डैडी को इस हालत में छोड़ कर मैं अशोक के घर नहीं जा सकती.''

''परंतु उस का घर तुम्हारे घर से कहां दूर है. तुम रोज ही उन का हालचाल ले सकती हो,'' डाक्टर मित्तल ने कहा.

''अशोक कितने सालों से तुम्हारा इंतजार कर रहा है,'' रणजीत ने कहा.

''मैं ने कब उस से इंतजार करने के लिए कहा है,'' लावण्य बोली.

''बेटी, वह तुम से प्यार करता है,'' डाक्टर मित्तल बोले.

''मुझे मालूम है अंकल,'' लावण्य बोली, ''पर मुझ से यह नहीं होगा. मैं इस बारे में अशोक से बात कर लूंगी.''

अशोक भी लावण्य के बगैर जिंदा रहने की कल्पना नहीं कर सकता था. अशोक और लावण्य लगभग रोज ही मिलते थे पर अब उन के मिलने में पहले जैसा रोमांच नहीं रहा था. वे दोनों एकांत में मिलते, प्यार की बातें करते. लेकिन लावण्य हमेशा चिंतित रहती. उसे घर जाने की जल्दी रहती. अशोक उसे रोकता भी, पर वह रुकती नहीं थी.

अशोक उस पर दबाव भी नहीं डालता था. लावण्य उस की अंतरात्मा, स्वतः सृष्टि बन चुकी थी.

एक रात अचानक जया ने अशोक को फोन किया, ''अशोक, मेजर साहब की तबीयत ठीक नहीं है.''

''क्या हुआ आंटी उन्हें?''

''तुम यहां जल्दी आ जाओ.''

''पर आप बताएं तो कुछ.''

जया ने कुछ बताए बगैर ही फोन रख दिया. अशोक से जितनी जल्दी हो सका, वह लावण्य के घर पहुंच गया. अशोक बंगले के कंपाउंड में प्रवेश करते ही समझ गया कि कुछ गड़बड़ है. बंगले के सामने तमाम गाड़ियां खड़ी थीं. अशोक ने भी अपनी गाड़ी खड़ी की. तमाम लोग वहां खड़े थे. लोग अंदरबाहर आजा रहे थे. पूरे घर की बत्तियां जल रही थीं. बैडरूम के दरवाजे पर भी कुछ लोग खड़े थे.

कमरे में वीरान सन्नाटा था. पलंग पर मेजर विवेक चित लेटे थे. लावण्य उन के पैरों के पास बैठी थी. शहर के प्रसिद्ध कार्डियोलौजिस्ट और मेजर के दोस्त डा. संजय मेजर साहब के सीने की मसाज कर रहे थे.

अशोक सांस रोके कमरे के कोने में खड़ा था. डा. संजय के माथे पर आई पसीने की बूंदें मेजर के ऊपर टपकने लगी थीं. मेजर साहब डा. संजय के परम मित्र थे. फिर भी वे निसहाय थे. उन्हें सबकुछ मालूम था. इस के बावजूद वे मसाज कर रहे थे.

आखिर उन्होंने एक लंबी सांस ली. गले में टंगा स्टेथेस्कोप उतार कर हाथ में लपेटा. कोट की जेब से रूमाल निकाल कर अपना पसीनेभरा चेहरा साफ किया? कमरे में खड़े लोग पलंग पर निश्चेत पड़े मेजर के बदले डा. संजय को आंखें फाड़ कर ताक रहे थे. डा. संजय कुछ बोले बगैर ही कमरे के दरवाजे की ओर बढ़े और कमरे से बाहर निकल गए.

मृत मेजर के सीने पर कमरे का सन्नाटा टूट पड़ा था. अशोक भी कमरे से बाहर आ गया था. शायद वह लावण्य की उस दशा को नहीं देख सकता था. अशोक की समझ में यह नहीं आ रहा था कि एकाएक मेजर को क्या हो गया. जवानी में विधवा हो चुकी जया, मृत्यु के इस दुख में डूबी लौकिक कार्यों में लगी थी.

''एकाएक क्या हुआ साहब को?''

''भैया, वही रोज वाली पंचायत. कल से ही उन की तबीयत ठीक नहीं थी. पीछे खेतों

में पूरा दिन न जाने क्या करते रहे. शाम को जब घर आए तो हांफ रहे थे. आते ही 'विद्या, विद्या' पुकारते हुए घर के सभी कमरों में घूम आए. एक पैर से इस तरह दौड़ते हुए वे और परेशान हो गए.

फिर खेतों की ओर भाग गए और वहीं ट्यूबवेल के पास गिर गए. यह तो अच्छा था कि पीछेपीछे लावण्य भी चली गई थी. मैं भला इस उम्र में कहां दौड़ पाती. गिरने के बाद भी वे 'विद्या, विद्या' की रट लगाए हुए थे. आदमी के भी मन का क्या पता. बहुत प्रेम भी अच्छा नहीं होता,'' जया ने रोते हुए कहा, ''बेचारी लावण्य मां के जाने के बाद एक दिन भी शांति से नहीं बैठ पाई. पूरा दिन भागीभागी फिरती थी. इस लड़की की माया न होती तो शायद विद्या के मरने के बाद ही जहर पी लिया होता. कितनी दवा कराई, पंडितजी से पूजापाठ कराया, एक तांत्रिक को बुला कर झाड़फूंक कराई. सब लाखों रुपए खा गए पर उन्हें जरा भी आराम नहीं हुआ.''

पूजापाठ और झाड़फूंक से कोई बीमारी ठीक हो जाती तो डाक्टरों की क्या जरूरत थी? लोग इतनी मेहनत कर के पढ़ाई ही क्यों करते? ये पूजापाठ और झाड़फूंक करने वालों का काम ही है भोलेभाले लोगों को उल्लू बनाना. बहरहाल, आप मुझे पूजापाठ कराने वाले पंडित और उस तांत्रिक का पता दे दीजिए, मैं उन्हें देखता हूं. उन्होंने जो लाखों रुपए आप से ठगे हैं, उसे वापस करेंगे या फिर जेल जाएंगे,'' अशोक ने कहा.

जया ने पूजापाठ कराने वाले पंडित और झाड़फूंक कराने वाले तांत्रिक का पता ही नहीं, बल्कि फोन नंबर भी अशोक को दे दिए.

अशोक ने दोनों का फोन नंबर और पता फोन में ही नोट कर लिया.

सबकुछ शांति से निबट गया था. लावण्य इतना रोई थी कि किसी से देखा नहीं गया था. सबकुछ निबट जाने के बाद अशोक ने पंडित और तांत्रिक को धर दबोचा. आखिर जेल जाने और पोल खुलने के डर से दोनों ने जया से लिया एकएक पैसा वापस कर दिया. वह पैसा ला कर अशोक ने जया के हाथों पर रखा तो जया ने कहा, ''बेटा, कहीं वे दोनों कुछ बुरा न कर दें?''

अशोक ने कहा, ''आंटीजी, जो भला नहीं कर सकता, वह बुरा कहां से कर पाएगा. आप इस की जरा भी चिंता न करें. मैं उन दोनों को देख लूंगा.''

अशोक रोज ही लावण्य के यहां जाता रहा. लावण्य के मामा के घर वालों को पता ही था कि उस के साथ लावण्य की शादी होने वाली है. इसलिए उसे सभी घर के सदस्य की तरह ही मानते थे. लगभग 15 दिनों तक एक तरह से अशोक लावण्य के यहां ही रहा. लावण्य एक सामान्य लड़की की तरह सब से व्यवहार कर रही थी.

तमाम लोग लावण्य से मिलने आ रहे थे. ऐसे में अशोक और उस में सिर्फ औपचारिक बातें ही हो पाती थीं. धीरेधीरे लावण्य के सगेसंबंधी जाने लगे थे.

अशोक का कामकाज उन दिनों कुछ ज्यादा ही चल रहा था. दोस्तों के साथ चल रहे कंस्ट्रक्शन के काम में उस की मदद की जरूरत थी. इसलिए 3-4 दिन वह लावण्य के घर नहीं जा सका था. उस ने जया से लावण्य का ध्यान रखने के लिए कह दिया था. दरअसल, उसे शहर से बाहर जाना पड़ा था. लौटते ही वह लावण्य के यहां जाने के लिए तैयार हुआ तो मां बोली, ''अशोक, मैं भी चलूंगी लावण्य के यहां. मुझे भी वहां गए कई दिन हो गए हैं.''

अशोक मां को भला कैसे मना कर सकता था, जबकि उस दिन वह अकेला ही जाना चाहता था. अशोक मां को ले कर लावण्य के यहां पहुंचा.

लावण्य ड्राइंगरूम में बैठी कुछ पढ़ रही थी. अशोक और उस की मां को देखते ही लावण्य ने पत्रिका रख दी और खड़ी हो कर बोली, ''आइए मांजी.''

अशोक की मां ने लावण्य के सिर पर हाथ फेरा और सोफे पर बैठ गईं.

''कई दिनों बाद आप आईं मांजी,'' लावण्य बोली.

''मैं अकेली कैसे आती बेटा. आज अशोक आने लगा, तो इस के साथ आ गई.''

''आप आईं तो बहुत अच्छा लगा,'' लावण्य बोली, ''जया आंटी, देखो तो कौन आया है.''

रसोई से हाथ पोंछते हुए जया आई. अशोक और उस की मां को देख कर बोली, ''अरे ज्योत्सनाजी, आप, बैठिए, मैं पानी ले कर आती हूं.''

''पानी ही क्यों, गुलाबजामुन भी लाओ न,'' लावण्य बोली, ''मांजी, मेरे डैडी को गुलाबजामुन बहुत पसंद थे. वे गुलाबजामुन के बिना एक भी दिन नहीं रह पाते थे. वह भी जया आंटी का बनाए हुए. मां के बनाए हुए भी नहीं.

''मैं ठीक कह रही हूं न जया आंटी. अरे आंटी, ये सब लोग आए हैं, डैडी को बुलाओ न.''

''वे मेरे कहने से कहां आने वाले हैं,'' जया स्तब्ध हो कर बोली.

''वे पूरे दिन स्टडीरूम में ही क्यों बैठे रहते हैं,'' लावण्य ने कहा, ''बोलो न अशोक की मां आई हैं. खैर, मैं ही जाती हूं. मेरे गए बगैर वे नहीं आएंगे,'' कह कर लावण्य उठ खड़ी हुई.

''लावण्य,'' अशोक बोला पर लावण्य उस की बात पर ध्यान दिए बगैर आगे बढ़ी तो पीछेपीछे अशोक भी चल पड़ा.

''डैडी... डैडी,'' आवाज लगाते हुए लावण्य सीढ़ियां चढ़ने लगी. मेजर विवेक का स्टडीरूम ऊपर की मंजिल पर था. अशोक सीढ़ियों के पास ही खड़ा रहा. थोड़ी देर में वह नीचे आ कर बोली, ''आंटी, डैडी कहां हैं?''

''बेटा, वे तो खेतों में गए हैं,'' जया आंटी ने कहा.

''अब तो वे शाम को ही आएंगे,'' लावण्य बोली.

जया अशोक की मां को इशारे से समझा रही थी कि अब आप जाइए, जबकि उन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था. लेकिन, अशोक सब समझ गया था.

''चलो मां, आप को घर पहुंचा कर, मुझे यहां फिर आना पड़ेगा,'' अशोक अपनी हैरानपरेशान मां को ले कर बाहर आ गया.

अशोक को बाहर निकलते देख लावण्य बोली, ''अशोक, तुम जा रहे हो?''

''नहीं, मां को पहुंचा कर आता हूं.''

''ठीक है, तब तक डैडी भी आ जाएंगे,'' लावण्य ने मुसकराते हुए कहा.

''यह सब देखनेदिखाने के लिए आप ने मुझे ही क्यों चुना,'' जया बुदबुदाई.

अशोक उन से कुछ भी नहीं कह सका. उस का सिर चकराने लगा था. कहां जल्दी से जल्दी शादी के बारे में सोच रहा था, कहां यह बखेड़ा खड़ा हो गया. वह भी बुदबुदाया, 'लावण्य, मैं तुम्हारे बगैर नहीं रह सकता.'

उस ने रणजीत मामा से शादी के लिए बात की, जबकि लावण्य रट लगाए थी कि डैडी कहेंगे तभी वह शादी करेगी. आखिर अशोक ने मेजर विवेक के नाम को अपने फोन में व्हाट्सऐप संदेश दिखा कर उसे शादी के लिए राजी कर लिया.

लावण्य को बहका कर किसी तरह सभी ने अशोक से शादी करा दी. लावण्य जिस तरह भ्रम में थी, उस के भ्रम को उसी तरह बनाए रखने के लिए अशोक ने मेजर विवेक का एक कमरा अपनी कोठी में भी अलग से बना दिया था. उन के नाम से अपने फोन में व्हाटसऐप चला भी रहा था. जब कभी लावण्य मेजर विवेक को ले कर बहकती, वह अपने फोन में मेजर साहब के नाम का संदेश दिखा कर उसे समझा लेता, क्योंकि जल्दी ही वह उसे समझाना सीख गया था. ●

स्वस्थ एवं उज्ज्वल
त्वचा के लिए
New
Dr. Juneja's
रूप मंत्रा
Ayurvedic Face Cream & Face Washes
✓ Paraben Free
✓ Alcohol Free
✓ Steroids Free
✓ Silicon Free
✓ Mineral Oil Free
Roop Mantra
CUCUMBER
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
NEEM
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
MIX FRUIT
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
CUCUMBER
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
ALOEVERA
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
LIME & MINT
Ayurvedic Medicinal Facewash
NO. 1 BRAND
WORLD'S GREATEST BRANDS
INDIA'S MOST TRUSTED BRAND
Most Trusted Brand of Asia 2016

24x7 Helpline No.: 87259 66666 | Website: www.roopmantra.com | Available at all medical & general stores

नए फ्रैंड से ऐसे हों फ्रैंडली

नई उम्र की फ्रैंडशिप भी नईनई होती है, जिस से मिले जो अच्छा लगा, जिस ने अच्छे से बात की, जो साथ घूमने, बातचीत करने लगा, जिस के मोबाइल से अच्छे मैसेज आने लगे, जो फेसबुक और इंस्टाग्राम पर हमारे फोटो पर लाइक और कमैंट करने लगे, वही फ्रैंड बन जाता है. जितनी जल्दी फ्रैंडशिप होती है उतनी ही जल्दी फ्रैंडशिप टूटने भी लगी है. कई बार तो सोशल मीडिया से शुरू और वहीं पर खत्म हो जाती है. स्कूल और कालेज में भी जो फ्रैंड बनते हैं उन से भी बड़ी जल्दी लड़ाई हो जाती है.

महिलाओं के मुद्दों पर पीएचडी करने वाली और समाजसेवी डाक्टर रेनू सिंह कहती हैं, ''टीनऐज की जो उम्र होती है उस में विचार जल्दीजल्दी बदलते हैं. आज के किशोरों के पास बहुत सारे साधन हैं जहां वे तमाम लोगों से रोज मिलते हैं, उन की अलगअलग अच्छाइयों को देख कर फ्रैंडशिप करते हैं. जब एकदूसरे से रोज मिलते हैं, ज्यादा मिलते हैं तो उन को लगता है कि फ्रैंड जैसा दिख रहा था वैसा नहीं है. कई बार खुद की ही रुचि बदल जाती है. ऐसे में बड़ी जल्दी फ्रैंडशिप टूट जाती है.

डा. रेनू सिंह

अकसर लोग बताते हैं कि अच्छे दोस्त कैसे चुनें या फ्रैंड कौन अच्छा है. मगर यह कोई नहीं बताता कि हम कैसे अच्छे फ्रैंड बनें या नए फ्रैंड्स से कैसे व्यवहार करें.

लेख • शैलेंद्र सिंह

''यह सीखने की उम्र होती है. इस तरह की गलतियों से ही बच्चे सीखते हैं. फ्रैंड बनाने और अगर दिक्कत हो तो फ्रैंडशिप छोड़ने को ले कर परेशान होने की जरूरत नहीं है. बच्चों में अकेलापन बढ़ रहा है. ऐसे में पहले यह जरूरी है कि वह फ्रैंडशिप करे. इस के जरिए वे फ्रैंडशिप को बनाना या छोड़ना भी सीख लेंगे. आमतौर पर फ्रैंडशिप उन लोगों में अधिक होती है जिन की रुचियां आप में मिलती हैं. फ्रैंडशिप करने के साथ ही साथ यह जरूरी है कि यह जरूर जानें कि नए फ्रैंड के साथ कैसे व्यवहार करें?''

फ्रैंडशिप को मजबूत होने का समय दें

फ्रैंड बनाना 2 मिनट के नूडल्स बनाने जैसा हो सकता है पर फ्रैंडशिप को मजबूत बनाने और करीबी बनाने के लिए समय देने की जरूरत होती है. जब 2 लोग फ्रैंड बनते हैं तो धीरेधीरे एकदूसरे की कमियों, अच्छी बातों, रुचियों, नापसंद होने वाली सारी बातों को समझ लेते हैं. कुछ दिनों बाद आप को यह भी समझ आ जाता है कि फ्रैंड कैसा व्यवहार पसंद करता है. जरूरी है कि फ्रैंडशिप को मजबूत होने के लिए समय दें.

फ्रैंडशिप में व्यवहार शालीन रखें

कहते हैं कि अच्छा और करीबी फ्रैंड वही होता है जो गाली दे कर बात करने का अधिकार रखता हो और सामने वाला उस की गाली का भी बुरा न माने. लेकिन पहले ही दिन अगर कोई फ्रैंड ऐसा करने लगेगा तो अच्छा नहीं लगेगा, फ्रैंडशिप टूट जाएगी. ऐसे में पहले फ्रैंड की फीलिंग्स, उस की समझदारी और सहनशीलता को समझें. फिर उस के व्यवहार के अनुकूल बात करें.

अपने पेरैंट्स से दोस्तों को मिलवाएं

फ्रैंड लड़का हो या लड़की, उसे अपने

पेरैंट्स से जरूर मिलवाएं. इस से पेरैंट्स को फ्रैंड के बारे में पता होगा तो वे समयबेसमय टीकाटिप्पणी नहीं करेंगे. दोस्तों के मन में भी किसी तरह का संकोच नहीं रहेगा. अपने घर पर ही फ्रैंड्स से आप मिल सकेंगे.

गलत कामों में साथ न दें

किशोरावस्था में कई तरह के गलत काम करने का मन भी करता है. इस की वजह यह है कि इस उम्र में सहीगलत का अर्थ और उस के परिणाम का पता नहीं होता. छोटेछोटे गलत काम तो सुधारे या संभाले जा सकते हैं पर सैक्स, नशे जैसे गलत काम ऐसे हो जाते हैं जिन का खमियाजा लंबे समय तक भुगतना पड़ता है. अगर कोई फ्रैंड इस में शामिल होने के लिए कहता है तो उस को मना कर दें.

कैसे समझें गलत काम को

जब भी हम कोई गलत काम करने के लिए तैयार होते हैं, हमारे दिल के अंदर से एक आवाज आती है कि यह काम नहीं करना चाहिए. कई बार लोग दिल की आवाज को सुन कर उस काम को नहीं करते. कई बार दिल की बात को नजरअंदाज कर के उस काम को कर जाते हैं. जिस काम को करने के लिए हमें लोगों की नजरों से खुद को बचाना पड़ता है वह गलत काम होता है.

जो पंसद न हो वह काम न करें

हर किसी की अपनी पसंद और नापसंद होती है. फ्रैंडशिप में जरूरी नहीं कि हर पसंद और नापसंद एकजैसी हो. किसी को कुछ खाने में पसंद है, किसी को कुछ. ऐसा हर क्षेत्र में हो सकता है. ऐसे में अपने से अधिक दूसरे की पसंद का खयाल रखें. इस से फ्रैंडशिप गहरी होगी.

सोशल मीडिया पर कमैंट्स संभल कर करें

नया जमाना सोशल मीडिया का है. हर फ्रैंड सोशल मीडिया पर ऐक्टिव है. ऐसे में उस की पोस्ट पर कमैंट्स करते समय सावधान रहें. कुछ ऐसे कमैंट्स न करें जो फ्रैंड को पसंद न हो या उस के दूसरे फ्रैंड्स को पसंद न आए. कोई आलोचना करनी है या सुझाव देने हैं जिन के बुरे लगने का खतरा हो तो उसे अकेले में कारण सहित बताएं.

ऐसे उत्साह बढ़ाएं

टीनऐज में बहुत सारे ऐसे काम होते हैं जिन में लोग फेल भी हो जाते हैं. ऐसे में आलोचना करने वालों की बाढ़ सी आ जाती है. जब कभी ऐसा हो तो फ्रैंड का उत्साह बढ़ाएं. उसी समय उस की गलतियों का एहसास न कराएं.

गलतफहमियों को आपस में सुलझाएं

फ्रैंडशिप में गलतफहमी भी बड़ी जल्दी फैलने लगती है. कई बार फ्रैंडशिप से परेशान लोग इस का लाभ उठाने का प्रयास करते हैं. ऐसे में जरूरी है कि गलतफहमी होने पर उस को आपस में सुलझाएं. अगर कोई शिकायत किसी से है तो उस को उस से ही कहें. किसी दूसरे से कहने का लाभ नहीं होता है. उलटे, फ्रैंडशिप टूट जाती है.

समय और सीमाओं का ध्यान रखें

टीनऐज ऐसा दौर होता है जब कैरियर को बनाने की दिशा में युवा बढ़ रहे होते हैं. ऐसे में केवल फ्रैंडशिप को ही प्रमुखता न दें. अपने कैरियर को भी महत्त्व दें. आपस में एकदूसरे का सहयोग कर के अपने कैरियर की अच्छी बुनियाद तैयार करें. ●

सितम ढाया न कर

मुझे इश्क है तुझ से यूं सताया न कर,
अकसर खफा हो कर मुझे रुलाया न कर.

बड़ी मुद्दतों बाद तुझ से हुई है मुलाकात,
तू बारबार गुस्सा हो दिल दुखाया न कर.

यूं नजदीक आ कर गले से लगा ले मुझे,
दूर खड़ी रह कर यह वक्त जाया न कर.

तेरी मुसकराहट पर तो आज भी हूं मैं फिदा,
जब भी तू हंसती है चेहरा छिपाया न कर.

मेरे इश्क को अपने दिल में महफूज रखना,
आशिक हूं तेरा मुझ पर सितम ढाया न कर.

– उदय मेघवाल 'उदय' ●

मधुर सुर

मधुर सुर है तुम्हारे पास,
मैं तुम्हे संगीत देती हूं,
मोहक शब्द तुम दे दो,
मैं तुम्हें गीत देती हूं.

सितारों की रोशनी,
हवाओं की सरगम,
तुम दे दो,
जज्बात मैं देती हूं.

शोख अंदाज में,
रूठना है तुम्हारे पास,
मैं मनाने की,
तरकीब देती हूं.

आंखों में तुम्हारी,
हार की परछाईं है,
मैं तुम्हें खुशबूभरी,
जीत देती हूं.

– इंदु सिन्हा 'इंदु' ●

मुक्ता में नए अंकुर

के अंतर्गत हम नवोदित कवियों को मौका दे रहे हैं कि वे कुछ नए उद्‌गार, नई शैली की कविताएं लिख कर हमें भेजें. कविताओं में कुछ नयापन हो जो युवाओं की सोच को दर्शाए.

संपादक को कविता भेजने का पताः
दिल्ली प्रैस
ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग नई दिल्ली-110055
या
editor@delhipress.biz पर ईमेल करें.
आप हमें 8527666772 पर
व्हाट्सऐप या मैसेज भी कर सकते हैं.

पूर्ण स्वदेशी, पूर्ण आयुर्वेदिक

कठिन समस्याएं अब न होंगी

सच्ची सहेली है बेहतर स्वास्थ्य के लिए सबसे भरोसेमंद औषधि एवं टॉनिक

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

टॉनिक के साथ पाएं 20 टेबलेट्स Free

67 दुर्लभ जड़ी-बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वेदिक टॉनिक निम्न समस्याओं में विशेष सहायक है।

सच्ची सहेली
आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक
67 जड़ी-बूटियों से बना, महिलाओं के लिए भरोसेमंद आयुर्वेदिक टॉनिक

Helps in:

➲ कठिन दर्द	➲ चिड़चिड़ापन
➲ थकान	➲ कमज़ोरी
➲ कमर कटना	➲ इम्यूनिटी

सच्ची सहेली®

24x7 Helpline : 77106 44444 | www.facebook.com/sachisaheli | Available at all medical & general stores

डेट पर जाओ न रोका किस ने है

लेख • सोमा घोष

डेटिंग करने का अर्थ सिर्फ सैक्स या अंतरंग संबंध बनाना नहीं है जैसी आमतौर पर मैंटलिटी बनी हुई है. डेट कोई बुरी बात नहीं, इस से आप एकदूसरे को जानतेसमझते हैं और अच्छे दोस्त बनतेबनाते हैं.

दीपा और संदीप क्लासमेट हैं. दोनों की दोस्ती कई सालों से है. टीनऐजर दीपा शांत स्वभाव की है, इसलिए किसी से अधिक बात नहीं करती. क्लास में कुछ छूट जाने पर वह संदीप से ही नोट कर लेती है.

एक दिन दीपा की सहेली चहकती हुई दीपा के पास आ कर बोली कि वह कल डेटिंग पर गई थी. खूब मजा आया. बहुत सारी बातें कीं और एकदूसरे के बारे में विस्तार से जान कर व क्लास के बच्चे उन दोनों के बारे में क्याक्या कहते हैं, सुन कर खूब मजा आया और आगे भी डेट पर जाने की प्लानिंग है.

दीपा कुछ सुनना नहीं चाह रही थी. दरअसल उस ने डेटिंग के बारे में सुन तो रखा था पर कभी जाने के बारे में नहीं सोचा, क्योंकि उस के पेरैंट्स उस के आनेजाने को ले कर बहुत औब्जर्व करते हैं और वह उन की अकेली संतान है. लेकिन उस की सहेली की डेट पर हुए अच्छे अनुभव को बेमन से ही सही, सुन कर दीपा को लगा कि शायद उस से कुछ छूट रहा है, जो ये लड़कियां कर रही हैं पर वह नहीं.

इस बात को उस ने संदीप से शेयर किया. संदीप, दीपा की बात समझ रहा था, लेकिन दीपा का खुल कर उस से कुछ न कह पाने को देख कर वह मन ही मन मुसकरा उठा और एक दिन वह उसे भी डेट पर ले जाएगा, ऐसा सोच कर घर चला गया.

संदीप का यह व्यवहार दीपा को अच्छा नहीं लगा था. लेकिन दीपा कह भी नहीं पा रही थी कि उस को डेट पर जाना है क्योंकि उसे भी अपनी सहेली की तरह एक्सपीरियंस करना है.

क्या है डेटिंग

असल में डेट पर जाने में गर्लफ्रैंड या बौयफ्रैंड बन जाना नहीं है. यह एक साधारण परिचय की तरह होता है जिस में पहली बार किसी से अकेले मिलते हैं, जहां आसपास कोई जानने वाला नहीं होता.

यही वजह है कि टीनऐजर्स अपनी पहली डेट को ले कर बहुत ही उत्साहित रहते हैं और वे इसे एक बहुत बड़ी अचीवमैंट समझते हैं. हालांकि यह सही है कि पहली बार डेट पर

जाने वाले टीनऐजर्स थोड़े घबराए हुए रहते हैं, लेकिन वे इस की तैयारी करते हैं ताकि वे अपने फ्रैंड्स को इंप्रैस कर सकें.

मनोरंजन का साधन है डेटिंग

मुंबई जैसे शहर में तो स्कूल जाने वाले टीनऐजर्स का डेटिंग पर जाना, उन की पढ़ाई के साथसाथ एक मनोरंजन का विकल्प माना जाता है. यहां हर जगह छोटेछोटे रैस्तरां हैं, जहां चाय, कौफी और सौफ्ट ड्रिंक बहुत ही कम पैसे में मिलते हैं.

कई बार ये टीनऐजर्स अपनी पौकेटमनी से बन मस्का और चाय ले कर इन रैस्तरां में बैठ जाते हैं और घंटों बातचीत करने के बाद अपनेअपने घर चले जाते हैं. इस के अलावा कई बार समुद्र के किनारे ऐसे टीनऐजर्स घंटों बैठ कर गपशप करते हैं.

ये बच्चे अधिकतर स्कूल से निकल कर लाइब्रेरी या किसी दोस्त का नाम बता कर पेरैंट्स को मना लेते हैं. पहली बार डेट पर जाने वाले टीनऐजर्स अधिकतर शौपिंग करते हैं, जिस में नई ड्रैस पहनना, नया बैग लेना, नए शूज और सैंडल लेना आदि होता है.

जरूरत से ज्यादा तैयारियां करने के बाद भी पहली डेट अगर असरदार नहीं हो पाती तो वे मायूस हो जाते हैं.

फीलगुड फैक्टर

कुछ लड़कियां और लड़के कइयों को डेट करते हैं और इस से वे अच्छा फील करते हैं, क्योंकि इस से दूसरों पर पीयर प्रैशर बनता है, ताकि वे भी डेट पर जाएं. इसे ध्यान में रखते हुए कई डेटिंग कंपनीज ने ऐप तैयार किए हैं. इन में ऐप के सहारे दोनों को अच्छे पार्टनर देने की कोशिश की जाती है.

लौकडाउन और कोविड की वजह से आज बच्चों की डेटिंग बढ़ी है पर असरदार नहीं. दरअसल, स्कूल बंद हैं, वर्चुअल डेट हो रही है जहां पर टीनऐजर्स बात कर सकते हैं पर मिल नहीं सकते. डेटिंग पर अवश्य जाएं, पर कुछ बातों का ध्यान रखें ताकि आप की पहली डेट यादगार बन जाए.

डेटिंग के कुछ खास टिप्स

- डेट पर जहां भी जाएं, वह स्थान शांत वातावरण वाला रोमांटिक प्लेस हो. वहां लोगों की भीड़ अधिक न हो. वहीं, एकदम सुनसान जगह को अवौयड करें.
- गिफ्ट वही लें जो अगले को पसंद हो. किताब, फ्लौवर्स, चौकलेट्स, परफ्यूम्स आदि कुछ भी दिया जा सकता है.
- डेटिंग पर समय से जाएं, ताकि अगला वहां पहुंच कर अकेला या अकेली महसूस न करे.
- वहां पहुंच कर आप के हावभाव के एक्सेप्टेबल होने की जरूरत है, ताकि अगला खुद को असहज न महसूस करे.
- शरमाएं नहीं, बल्कि खुल कर बात करें, ताकि एकदूसरे को न समझने की गलती न करें, कौन्फिडैंट व्यक्ति ही अधिक आकर्षक होता है. किसी के साथ जुड़ने का सब से अच्छा तरीका है आपसी रुचियों के बारे में बात करना जिन में किताबें पढ़ने, फोटोग्राफी, फिल्मों से ले कर और भी काफीकुछ होता है. सिनेमा के शौकीन अवार्ड के नतीजों की चर्चा कर सकते हैं. संगीत के शौकीन नए पसंदीदा आर्टिस्ट के बारे में बातचीत कर सकते हैं.

कुछ चीजों को अवौयड करना भी जानें

पहली डेट पर अपने साथी को शारीरिक स्पर्श न करें और न ही इन विषयों पर अधिक बात करें. इस से वह व्यक्ति असहज महसूस कर सकता है.

इस के अलावा किसी प्रकार के नशे से बचें, ताकि जोश में आप होश न खो बैठें. लौकडाउन के बाद से अधिकतर बच्चे 'ड्राई डेटिंग' पर विश्वास करने लगे हैं, ताकि उन के रिश्ते में किसी प्रकार खटास न आए. ●

पर्सनैलिटी विद परफैक्ट शूज

जूते आप की पर्सनैलिटी का अहम हिस्सा होते हैं. जूतों का एक बेहतरीन पेयर ओवर औल लुक को बढ़ा देता है. इस बात का खास ध्यान रखें कि आप के शूज आप के कपड़ों से मैच करते हुए होने चाहिए, जैसे कि यदि सूट पहना है तो उस के साथ फौर्मल शूज अच्छे लगेंगे. सोचिए अगर आप ने सूट के साथ स्पोर्ट्स शूज और कैजुअल वियर के साथ क्लासिक फौर्मल शूज पहन लिए तो कैसे लगेंगे. यदि ऐसा कुछ आप ने किया तो लड़कियों पर क्या इंप्रैशन पड़ेगा, यह आप खुद सोच सकते हैं.

पर्सनैलिटी में जूतों की राइट चौइस से चारचांद लग जाते हैं. लेकिन कई बार हर कपड़े के हिसाब से अलगअलग शूज खरीदना जेब पर भारी पड़ सकता है. इसलिए अपने वार्डरोब में तीन तरह के जूते तो जरूर रखें जो किफायती होगा और आप की जरूरत के मुताबिक हर मौके पर फिट भी बैठेगा. अपने शू क्लैक्शन में ब्लैक या ब्राउन लैदर शूज रखें, जो फौर्मल मीटिंग और औफिस में यूज किए जा सकते हैं. इसे शादी या छोटेमोटे फंक्शन में फौर्मल या सेमी फौर्मल लुक के साथ आजमा सकते हैं. इसी तरह वाइट स्नीकर्स आप के कैजुअल लुक और दोस्तों के साथ आउटिंग वगैरह के लिए सही चुनाव बन सकते हैं. गर्मियों के मौसम में फ्लिप फ्लौप को भी अपने वार्डरोब का हिस्सा बना सकते हैं और अपनी अट्रैक्टिव पर्सनैलिटी से लड़कियों को अट्रैक्ट कर सकते हैं.

▼ खास बात

जरूरी है जूतों का कंफर्टेबल होना : स्टाइल के साथ यह बात भी बहुत माने रखती है कि आप के जूते कंफर्टेबल हैं या नहीं. आप किसी भी स्टाइल का जूता कैरी करें, अगर वे कंफर्टेबल नहीं हैं तो समझिए सब बेकार क्योंकि अगर शूज आरामदायक नहीं है तो आप का सारा अटैंशन जूतों पर रहेगा और जहां भी होंगे वहां ध्यान पूरी तरह से भटक जाएगा. कहने का मतलब है कि जूतों को खरीदने के वक्त पहले उसे ट्राई कर के ही खरीदें. पूरी तरह से तसल्ली हो जाए, तभी खरीदें.

स्टाइल का खयाल रखें : मार्केट में कई तरह के स्टाइल के शूज आजकल उपलब्ध हैं. अगर फौर्मल शूज लेना चाहते हैं तो उस में भी कई तरह के स्टाइल जैसे बिजनैस शूज, लैदर शूज, सेमी फौर्मल लैदर जैसे औप्शन मौजूद हैं.

आप तय कर लें कि कैसा स्टाइल स्टेटमैंट अपनाना चाहते हैं. यदि आप मैच करता हुआ स्टाइल पसंद करते हैं तो बैल्ट के मैचिंग के कलर का शूज पेयरअप कर सकते हैं.

–किरण आहूजा ●

डायनैमिक हैंडबैग्स

यह तो आप भी मानती होंगी कि किसी अन्य एक्सेसरी के साथ, केवल एक स्टाइलिश हैंडबैग्स ले कर अपने लुक को पूरा कर सकती हैं, जो आप की ड्रैस और टेस्ट के साथ अच्छी तरह से मेल खाता हो. मार्केट में आप को कई स्टाइल और डिजाइन के हैंडबैग्स की रेंज मिल जाएगी. आप चाहे तो इन्हें स्लिंग बैग के रूप में भी इस्तेमाल कर सकती हैं. गुड क्वालिटी, स्मूद टैक्चर और सिल्की मैट लुक वाले ये पर्स कई रंगों में उपलब्ध हैं. कीमत, क्वालिटी और टिकाऊपन के अच्छे कौंबिनेशन वाले ये पर्स पौकेट फ्रैंडली भी हैं. इन फैंसी और टिकाऊ हैंडबैग्स को किसी भी अवसर पर इस्तेमाल कर के अपनी लुक को और भी स्मार्ट बना सकती हैं.

NO.1 BRAND INDIA 2016

पेट सफा तो

हर रोग दफा...

Divisa

अगर

पेट सफा

खाओगे

बिल्कुल जोर नहीं लगाओगे

20% EXTRA
पेट सफा
Natural Laxative GRANULES
EFFECTIVE RELIEF FROM CONSTIPATION
पेट सफा टेबलेट्स
पेट सफा
Natural Laxative TABLETS

super effective

अगर आप भी

कब्ज • गैस • एसिडिटी

जैसी परेशानियों से घिरे हुए है,
तो आज ही लीजिए,
आयुर्वेदिक पेट सफा ग्रेन्यूल्स
या टेबलेट। यह पहले दिन
से असर दिखाता है।

Dr. Juneja's

पेट सफा ®

Natural Laxative Granules & Tablets

बिजली गर्ल पलक तिवारी

हाल में रिलीज 'बिजली बिजली...' म्यूजिक वीडियो ने दर्शकों को दीवाना बना दिया. हार्डी संधू के गाए इस गीत में पलक तिवारी ने अपने शानदार डांस मूव्स और आकाशीय पोशाक में दर्शकों को बांधे रखा है. छोटे परदे की प्रसिद्ध अभिनेत्री श्वेता तिवारी की बेटी पलक तिवारी अभी 21 साल की हैं. पलक ने अपने फिल्मी कैरियर की शुरुआत फिल्म 'कुक्की' (2017) से की. दूसरी फिल्म 'रोजी : द सैफरन चैप्टर' में विवेक ओबराय के साथ इन्हें लीडिंग रोल करते देख सकते हैं.

पलक को मेकअप करना बहुत पसंद है. ये बचपन से मेधावी छात्रा रही हैं और खाली समय में पढ़ना व डांस करना पसंद करती हैं. कुत्तों से इन्हें काफी लगाव है. 2021 में पलक के इंस्टाग्राम अकाउंट डीएक्टिवेट करने से पहले इन की काफी अच्छी फैन फौलोइंग थी. ●

e OF THE MONTH

अब और नहीं ड्राई स्किन

लेख • मोनिका गुप्ता

सर्दी में स्किन का मौइश्चराइजर उड़ने लगता है, जिस कारण स्किन रूखीसूखी, बेजान सी लगने लगती है. रूखेपन को दूर करने व स्किन की नमी बनाए रखने के लिए अपनाएं घरेलू नुस्खे.

सर्दियों में अधिकतर लोगों की समस्या होती है उन की रूखी त्वचा. इस मौसम में रूखी त्वचा को मैनेज करना थोड़ा मुश्किल होता है. कितना भी मौइश्चराइजर या क्रीम लगा लो, थोड़े समय बाद चेहरा शुष्क पड़ ही जाता है.

कई बार रूखी त्वचा की वजह से चेहरे पर ड्राई पैचेस होने लगते हैं जो अलग से ही चेहरे पर दिखने लगते हैं. ड्राई स्किन की वजह से मेकअप भी जल्दी सैट नहीं होता और चेहरे की खूबसूरती ढल जाती है.

रूखी त्वचा को ठीक करने के लिए महिलाएं तरहतरह के फेसमास्क का इस्तेमाल करती हैं, जिन का असर कुछ दिनों तक ही रहता है. लेकिन कुछ ऐसे नैचुरल फेसमास्क हैं जिन्हें आप आसानी से घर पर बना सकती हैं. इन फेसमास्क की मदद से त्वचा में लंबे समय तक नमी बनी रहती है.

▼ एलोवेरा फेसमास्क

एलोवेरा में कई औषधीय गुण पाए जाते हैं जो शरीर और त्वचा दोनों के लिए फायदेमंद होते हैं. इस में पाए जाने वाले एंटीऔक्सीडेंट से चेहरे की कई समस्याएं दूर हो जाती हैं. एलोवेरा के इस्तेमाल से चेहरे में नमी आती है और जरूरी पोषण भी मिलता है.

एलोवेरा का फेसमास्क बनाने के लिए एलोवेरा जैल निकाल लें. इस में खीरे का जूस मिला लें. इस मास्क को आप फेस वाश करने के बाद चेहरे पर लगाएं और कुछ देर के लिए छोड़ दें. इस से चेहरे का रूखापन तो दूर होगा ही, चेहरे पर ग्लो भी नजर आने लगेगा.

▼ एवोकाडो फेसमास्क

फलों का सेवन सेहत के लिए फायदेमंद होता है. फलों से सेहत तो अच्छी रहती ही है, चेहरे पर चमक भी बनी रहती है. एवोकाडो पोषक तत्त्वों से युक्त होता है जो त्वचा को स्वस्थ बनाने में फायदेमंद होता है.

यह ड्राई और डैमेज स्किन को हटा कर त्वचा को कोमल बनाता है. एवोकाडो फेसमास्क बनाने के लिए 2 चम्मच मैश किए हुए एवोकाडो लें. उस में एक चम्मच शहद और एक चम्मच गुलाबजल डाल कर अच्छे से मिला लें. चेहरा क्लीन करने के बाद इस मास्क को चेहरे पर लगाएं. 10 मिनट बाद गुनगुने पानी से धो लें.

▼ स्ट्राबैरी फेसमास्क

स्ट्राबैरी से स्किन मुलायम ही नहीं बल्कि ग्लोइंग भी नजर आती है. इस में मौजूद विटामिन सी त्वचा के रूखेपन को दूर करने में मदद करता है. इस के इस्तेमाल से स्किन में जमे डैड सैल्स भी निकल जाते हैं. स्ट्राबैरी फेसमास्क के लिए 2–3 बड़े स्ट्राबैरी को मैश करें, फिर इस में शहद और एक चम्मच ओटमील मिलाएं.

इस का पेस्ट बना लें और 20 मिनट के लिए चेहरे पर लगा कर छोड़ दें. इस के बाद इसे ठंडे पानी से धो लें. इस मास्क को आप हफ्ते में 2 बार जरूर लगाएं.

▼ पपीता फेसमास्क

पतीता सेहत और खूबसूरती दोनों के लिए ही बेहतरीन माना जाता है. पपीते में पोटैशियम होता है जो त्वचा को हाईड्रेट और खूबसूरत बना कर रखता है. यह त्वचा में मौजूद डैड सैल्स, दागधब्बों को साफ करने में भी मदद करता है.

केला और चंदन फेसमास्क

बनाना फेसमास्क ड्राई स्किन को नमी पहुंचा कर उसे चमकदार बनाने में मदद करता है. इस से त्वचा का रूखापन तो खत्म होता ही है, झुर्रियों जैसी समस्या भी खत्म होने लगती है. यह स्किन को टाइट रखने में भी मदद करता है.

बनाना फेसमास्क बनाने के लिए एक पका हुआ केला लें. उसे अच्छे से मैश करें. अब उस में एक चम्मच शहद, एक चम्मच जैतून का तेल और आधा चम्मच चंदन पाउडर मिला दें. अब इस मास्क को त्वचा पर लगाएं. जब यह अच्छे से सूख जाए तब गुनगुने पानी से धो लें. ●

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों से निर्मित

Dr. Juneja's

डा.ऑर्थो®

Ayurvedic Oil, Capsules, Spray & Ointment

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

SELECTED NO.1 BRAND INDIA 2014
Consumer Survey Report, MRG 2014

ज्योतिष्मती तेल
जोड़ों में सूजन की समस्या को कम करने में मदद करता है।

गन्धपुरा तेल
जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों के दर्द और गठिया में सहायक।

निर्गुण्डी तेल
नसों के दर्द और जोड़ों के दर्द में फायदेमंद है।

तारपीन तेल
जोड़ों में सूजन और दर्द के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

पुदीना तेल
पुराने जोड़ों के दर्द की स्थिति में अत्यधिक फायदेमंद है।

कपूर तेल
विभिन्न जोड़ों के दर्द में बहुत उपयोगी है।

अलसी तेल
जोड़ों और मांसपेशियों में सूजन को कम करता है।

तिल तेल
मांसपेशियों और जोड़ों के दर्द को कम करने में मदद करता है।

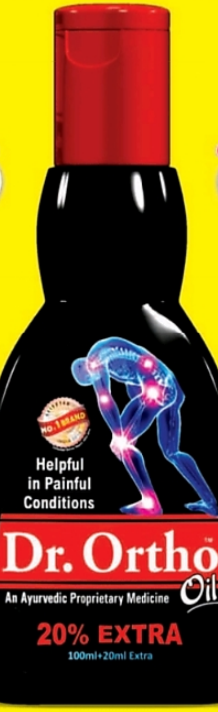
NO.1 BRAND
Helpful in Painful Conditions
Dr. Ortho™ Oil
An Ayurvedic Proprietary Medicine
20% EXTRA
100ml+20ml Extra

24x7 Helpline: 7876977777
www.drorthooil.com

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों के योग से निर्मित डॉ. ऑर्थो तेल अंदर तक समाकर दर्द को जड़ से कम करने में सहायता करता है। आयुर्वेदिक होने के कारण इसका प्रभाव अल्पकालिक नहीं लंबे समय तक बना रहता है।

लेख • पारुल भटनागर

टीनएजर्स एंड वैक्सिंग

वैक्सिंग कोई हौआ नहीं है. यदि सही नौलेज ले कर वैक्सिंग की जाए तो टीनऐजर्स के अनचाहे बालों की ग्रोथ को रोका जा सकता है.

टीनएजर्स की स्किन सौफ्ट होती है, छोटी उम्र में वैक्सिंग बिलकुल नहीं, हाथपैर खराब हो जाएंगे, सैंसिटिव स्किन पर रैशेज पड़ने का डर रहेगा, वैक्स करवाने से स्किन लटक जाएगी आदि बातें की जाती हैं.

सचाई यह है कि प्यूबर्टी के कारण शारीरिक व मानसिक रूप से काफी परिवर्तन होते हैं. खासकर, बालों की ग्रोथ तेजी से बढ़ती है. इस का कारण हार्मोनल चैंजेस होते हैं. ऐसे में टीनऐजर्स अपने शरीर में हुए इन बदलावों को स्वीकार नहीं कर पाते हैं और खुद की तुलना दूसरी लड़कियों से कर के कौंपलैक्स के शिकार होने लगते हैं. वैक्सिंग व उन की स्किन की सही जानकारी ले कर उन की इस समस्या का समाधान करें.

कैसी है स्किन

आप की स्किन की सौफ्टनैस व लचीलापन सिर्फ इस बात पर निर्भर नहीं करता है कि आप कैसा प्रोडक्ट इस्तेमाल करती हैं, बल्कि इस के लिए एक्स्टर्नल व इंटरनल दोनों कारण जिम्मेदार होते हैं.

जैसे, स्किन की इलास्टिसिटी कितना वाटर रिटेन करने में सक्षम है इस बात पर डिपैंड करती है तो वहीं सीबम के उत्पादन पर स्किन की सौफ्टनैस निर्भर करती है. स्किन की सैंसिटिविटी के लिए हमारा खानपान व हार्मोंस जिम्मेदार होते हैं, इसलिए स्किन टाइप को ध्यान में रख कर ही हमेशा वैक्सिंग करवानी चाहिए ताकि किसी तरह के रिऐक्शन का डर न हो. लेकिन ऐसा तभी हो पाएगा जब आप को इस की जानकारी होगी.

स्किन टाइप के हिसाब से वैक्सिंग

नौर्मल स्किन : नौर्मल स्किन वालों में वाटर व लिपिड कंटैंट काफी अच्छा होता है, जिस के कारण उन की स्किन ड्राई नहीं होती. यह अतिरिक्त सीबम का उत्पादन भी करता है. इस से स्किन पर किसी भी तरह का रिऐक्शन नहीं होता. ऐसी स्किन वाले टीनऐजर्स के लिए सौफ्ट व हार्ड वैक्स बैस्ट विकल्प है, जो उन की स्किन को नरिश करने का काम करता है.

ड्राई स्किन : ड्राई स्किन पर्याप्त मात्रा में सीबम का उत्पादन करने में सक्षम नहीं होती है, जिस से स्किन ड्राईड्राई सी लगती है. इस के लिए वैक्सिंग से पहले स्किन को ऐक्सफौलिएट करने की जरूरत होती है ताकि डैड स्किन रिमूव हो कर स्मूद हो सके.

ऐसी स्किन वालों के लिए हनी व कोको वैक्स बेहतर औप्शन है, जो स्किन को मौइश्चर प्रदान करने के कारण सौफ्ट फील देता है.

औयली स्किन : औयली स्किन में वाटर लैवल अच्छाखासा होता है. लेकिन अतिरिक्त सीबम औयली स्किन के लिए परेशानी का कारण बनता है. इसलिए स्किन पर वैक्सिंग से पहले पाउडर अप्लाई किया जाता है ताकि अतिरिक्त औयल को पाउडर सोख सके और वैक्स एक बार में ही अपना काम कर दे. ऐसी स्किन पर क्रीम वैक्स अच्छा रिजल्ट देती है.

सैंसिटिव स्किन : सैंसिटिव स्किन को खास केयर की जरूरत होती है क्योंकि ऐसी स्किन पर एलर्जी पनपने के चांसेज ज्यादा रहते हैं. इस के लिए लो मैल्ट वाली हार्ड वैक्स अच्छी रहती है, जो स्किन को सेफ रखने के साथसाथ स्मूद बनाए रखती है.

सभी स्किन के लिए बैस्ट है क्रीम वैक्स

क्रीम वैक्स को सभी स्किन टाइप के लिए उपयुक्त माना जाता है क्योंकि यह कम हीट पर पिघलती है और बाकी वैक्स की तुलना में चिपकती भी कम है. यह विभिन्न औयल व मिल्क से बनी होने के कारण स्किन को नरिश करने का काम करती है.

पतली स्किन की ज्यादा केयर

बड़ों की तुलना में टीनएजर्स की स्किन थोड़ी पतली होती है, जिस से स्किन को नुकसान पहुंचने का डर बना रहता है. ऐसे में अगर आप अपने बच्चे की वैक्सिंग खुद घर पर करने की सोच रही हैं तो आप का यह निर्णय सही नहीं है, क्योंकि आप को स्किन व वैक्स के बारे में सही जानकारी नहीं होने के कारण हो सकता है कि आप ज्यादा गरम वैक्स स्किन पर लगा दें, जिस से स्किन जल भी सकती है.

ऐसे में प्रोफैशनल की देखरेख में ही इसे करवाना उपयुक्त रहता है. टीनऐजर्स की स्किन को देख कर ही पता लगा लेते हैं कि उन की स्किन पर किस तरह की वैक्स की जरूरत है, जिस से दर्द भी कम हो व बाल भी जड़ से निकल जाएं. उन की देखरेख में स्किन जलने, काली पड़ने का डर नहीं रहता, जो शायद घर पर संभव न हो. वे फ्री व पोस्ट वैक्सिंग केयर का भी खास ध्यान रखते हैं.

भूल कर भी हेयर रिमूवल क्रीम्स नहीं

हेयर रिमूवल क्रीम्स भले आसानी से उपलब्ध होने के साथसाथ शरीर से अनचाहे बालों को हटाने का बहुत ही आसान सा उपाय हैं लेकिन इस में मौजूद कैमिकल्स से स्किन काली पड़ने के साथसाथ उन पर रैशेज, दागधब्बे भी पड़ जाते हैं. साथ ही, 3–4 दिनों में ही काले व मोटे बाल आने शुरू हो जाते हैं, जो स्किन की सौफ्टनैस को खत्म करने का काम करते हैं.

वैक्सिंग से ग्रोथ भी कम

हेयर रिमूवल क्रीम की तुलना में वैक्सिंग जड़ से बालों को निकालने का काम करती है, जिस से लंबे समय तक बाल नहीं आते और जब आते हैं तो बहुत ही सौफ्ट ग्रोथ आती है. खास बात यह है कि यह स्किन की टैनिंग को रिमूव करने के साथ स्किन के टैक्स्चर को भी इंप्रूव करती है.

लेजर ट्रीटमैंट भी कारगर

हर लड़की खूबसूरत दिखना चाहती है. लेकिन कई बार मासिकधर्म शुरू होने या एंड्रोजन हार्मोन (जो पुरुष हार्मोन होता है) की मात्रा महिला के शरीर में बढ़ने से चेहरे पर अनचाहे बाल आने लगते हैं, जिस से उन्हें लोगों को फेस करने में शर्मिंदगी महसूस होती है और इस से छुटकारा पाने के लिए कभी वे चोरीछिपे थ्रेड चलवाती हैं तो कभी रेजर का इस्तेमाल करती हैं, जिस से चेहरा खराब होने लगता है.

ऐसे में जब बात चेहरे की आए तो मांओं को चाहिए कि वे अपने बच्चों को अच्छे डर्मेटोलौजिस्ट को दिखाएं ताकि चेहरे पर आने वाले अनचाहे बालों का कारण ज्ञात हो सके. हार्मोंस में गड़बड़ी होने पर उसे दवाइयों से कंट्रोल किया जा सकता है. वहीं चेहरे पर अनचाहे बालों को लेजर ट्रीटमैंट से भी ठीक किया जा सकता है, जो काफी सेफ व इफैक्टिड तरीका है.

यह तकनीक चेहरे, गरदन, हाथपैरों या शरीर के किसी भी भाग से बालों को हटाने में सक्षम है. इस के लिए 7–8 सिटिंग्स दी जाती हैं. लेकिन रिजल्ट काफी बेहतर मिलता है. और फिर बारबार वैक्सिंग करवाने से भी छुटकारा मिल जाता है.

इसलिए मांएं वैक्सिंग को हौआ न बनाएं बल्कि वैक्सिंग की तकनीक की सही जानकारी रख कर अपने बच्चों की जरूरतों के साथ उन की भावनाओं को समझें ताकि उन्हें अनचाहे बालों के कारण किसी के सामने शर्मिंदा न होना पड़े. ●

दिल्ली प्रैस
'नजदीकी रिश्तों' में सांसों की ताजगी ही नहीं
विचारों में भी ताजगी होनी चाहिए
पढ़िए सरिता
Email: subscription@delhipress.in | circulation@delhipressgroup.com
Mob: 8588843402

वैब सीरीज रिव्यू

क्या देखें

क्युबिकल्स (सीजन 2)

डायरैक्टर–अमित गोलानी
स्टारकास्ट–अभिषेक चौहान, अर्नव भसीन, निधि बिष्ट, बद्री चह्वाण, शिवंकित सिंह परिहार और अन्य.
प्लेटफौर्म–सोनी लिव
जौनर–कौमेडी ड्रामा.

साल 2019 में क्यूबिकल्स सीरीज का पहला सीजन आया था. यह टीवीएफ द्वारा बनाई गई है. यूथ सैंट्रिक इस प्लेटफौर्म में युवाओं की समस्याओं को टीवीएफ ने अपने कैमरे से दिखाने की कोशिश की है, जिस का एक हिस्सा क्युबिकल्स में देखने को मिलता है.

इस सीरीज का टारगेट औडियंस ग्रुप है औफिसगोइंग यूथ, जो आज के टाइम में एक बड़ा नंबर है. गुरुग्राम, नोएडा जैसे शहरों में बड़ीबड़ी कांच की बिल्डिंगों में घुसते युवाओं की जिंदगी को फोकस में लाती 'क्युबिकल्स' अच्छी सीरीज बन पड़ी है.

क्युबिकल्स के पहले सीजन में हमें पीयूष प्रजापति नाम के एक लड़के की कहानी दिखाई गई थी. उस ने एक टैक फर्म में अपनी पहली नौकरी शुरू की थी. इस सीरीज के दूसरे सीजन में हमें उस की कहानी का एक्सटैंडेड या यों कहें कि रियल लाइफ वर्जन देखने को मिलता है.

नौकरी के पहले साल जोश में रहने वाला पीयूष अब मैलो डाउन हो गया है. अब वह 9 टू 5 जौब से नीरस हो चुका है. काम खत्म करो, घर जाओ. पैसे बढ़वाने हैं तो अप्रेजल का वेट करो या फिर नई नौकरी ढूंढ़ो. मगर प्रौब्लम यह है कि इस प्रोसैस के बीच उस की नैतिकता और इंटरनैट पर पढ़ा हुआ ज्ञान आड़े आने लगता है.

उसे लगता है कि वह क्वार्टर लाइफ क्राइसेस से गुजर रहा है. उस के पास 2 चौइस हैं, एक, उसे ऐसी जगह नौकरी करनी चाहिए जहां वह कंफर्टेबल महसूस करे. दूसरा, उस जौब औफर को ऐक्सैप्ट करे जहां बढ़ी हुई सैलरी और गलाकाट कंपीटिशन हो.

इस सीरीज के पहले सीजन में जौब को रोमांटिसाइज करने की सीख मिली थी, उस का एक्सटैंडेड वर्जन ही इसे कहा जा सकता है लेकिन अलग तरीके से. सीरीज अच्छी है, बिलकुल युवाओं के मतलब की. जिन्होंने पहला सीजन नहीं देखा है, उन से इतना ही कहेंगे, 'भई, छोटेछोटे एपिसोड हैं, तुरंत पहला सीजन देख आओ.'

ये कालीकाली आंखें

डायरैक्टर– सिद्धार्थ सेनगुप्ता
स्टारकास्ट– श्वेता त्रिपाठी, आंचल सिंह, ताहिर राज भसीन, सौरभ शुक्ला, ब्रिजेंद्र काला और अन्य.
प्लेटफौर्म– नैटफ्लिक्स
जौनर–थ्रिलर ड्रामा.

जिन दर्शकों को मिर्जापुर टाइप सीरीज पसंद है उन्हें यह सीरीज भी पसंद आएगी. देसी अंदाज है, अक्खड़पन है, तेवर वही है, कैमरा शूट भी कुछकुछ वैसा ही है. इश्क, धोखा, अपराध की काली दुनिया और मजबूरी जैसे मसलों से बनी यह वैब सीरीज नैटफ्लिक्स प्लेटफौर्म पर रिलीज की गई है.

सीरीज में पात्रों को धीरेधीरे स्थापित किया गया है, इसलिए एक समय के बाद जुड़ना आसान हो जाता है. वैब सीरीज की खासीयत भी यही है कि इस में कैरेक्टर बिल्डिंग में समय मिल जाता है.

इस की कहानी विक्रांत यानी ताहिर राज भसीन की है. वह भिलाई में जा कर काम करना चाहता है, लेकिन उस के पिता स्थानीय नेता सौरभ शुक्ला के यहां एकाउंटैंट हैं. नेता की एक बेटी है पूर्वा यानी आंचल सिंह.

पूर्वा विक्रांत को बचपन से प्यार करती है और विक्रांत को शिखा यानी श्वेता त्रिपाठी पसंद है और वह उस से प्यार करता है. लेकिन विक्रांत की जिंदगी में जैसे ही पूर्वा की एंट्री होती है, उस के सारे सपने टूट जाते हैं. अब उस के सामने खुद को और खुद से जुड़े लोगों को बचाने की जद्दोजेहद है. इसी चक्कर में कई साजिशें रची जाती हैं और कई तरह के गेम होते हैं.

सीरीज में किरदारों से जुड़े इमोशंस को अच्छी तरह से पेश किया गया है. सीरीज दर्शकों को बांधे रखने लायक बन पड़ी है. सीजन 2 के लिए कहानी को खत्म नहीं किया है. इस तरह की सीरीज देखने वाले दर्शकों की भी बड़ी संख्या है. ऐसे में यह सीरीज दर्शकों को बढ़िया लगेगी.

कैंपस डायरी

डायरैक्टर– अभिषेक यादव और प्रेम मिस्त्री
स्टारकास्ट– हर्ष बेनीवाल, सलोनी गौर, अभिनव शर्मा, ऋत्विक सहोर, राजेश यादव और अन्य.
प्लेटफौर्म– एमएक्स प्लेयर
जौनर–कौमेडी ड्रामा.

Masti
complicatio

कोविड महामारी का समय है. देश में कालेज अभी भी बंद हैं. इस से यंग स्टूडैंट्स की कालेज लाइफ वाली आजादी पर फर्क पड़ा है. कालेजगोइंग युवाओं की एक्टिविटीज सीमित हो गई हैं. ऐसे में कैंपस डायरी वैब सीरीज उन युवाओं को कालेज लाइफ का फील देने के लिए बनी है.

कालेज लाइफ, होस्टल लाइफ, टीनऐज रोमांस, कालेज पौलिटिक्स, फ्रैंडशिप और रैगिंग की जब भी चर्चा होती है तो जेहन में 'कोटा फैक्ट्री', 'होस्टल डेज', 'कालेज रोमांस' और 'मिस–मैच्ड' जैसी वैब सीरीज के नाम सामने आने लगते हैं.

इसी कड़ी में वैब सीरीज 'कैंपस डायरीज' का नाम भी लिया जा सकता है. इस में चंडीगढ़ की एक्सल यूनिवर्सिटी के 6 स्टूडैंट्स द्वारा नए जमाने के ड्रामे को रोचक अंदाज में पेश करने की कोशिश की गई है. इस में दिखाया गया ड्रामा आम नहीं है, क्योंकि यह आम सी मस्ती और दोस्ती से अलग है.

इस में ऐसे मुद्दों को दिखाया व सुलझाया गया है जिन के बारे में बहुत कम बात की जाती है, जैसे रैगिंग, सामाजिक हैसियत के आधार पर भेदभाव, एकतरफा प्यार की कहानियां, बड़े पैमाने पर ड्रग्स का इस्तेमाल और कड़वे रिश्ते.

इस वैब सीरीज में या तो ज्यादातर कलाकार नए हैं या फिर बहुत कम परदे पर नजर आए हैं. लेकिन हर किसी ने अपने किरदार के हिसाब से ठीकठाक काम किया है. सीरीज यूथ सैंट्रिक है. यह युवाओं के मसलों पर बात करती है तो देखने में मजा आएगा.

–रोहित ●

बूआजी

सत्यदीप तो परिवार का सदस्य था, सो उस का जाना तो अनिवार्य था ही लेकिन बाकी 6 में से कोई भी बूआजी का साथ अंतिम समय में छोड़ने को तैयार न था, यह जानते हुए भी कि यह एक तरह का रिस्क है. आखिर क्यों...

कहानी • हरीश जायसवाल

"गुड मौर्निंग डाक्टर." आगंतुक डाक्टर दीपक के चैंबर में दाखिल होते हुए बोला, "मेरा नाम सत्यदीप है और मैं यूएसए से आ रहा हूं. पिछले दिनों मेरी आप से लगातार बातें होती रही हैं." और वह डाक्टर दीपक के सामने रखी कुरसी पर बैठ गया.

"ओह, तो आप बूआजी के सुपुत्र हैं. आप ने आने में देरी कर दी," डाक्टर दीपक बोले और अभिवादन के तौर पर हाथ जोड़ लिए.

"नहींनहीं डाक्टर, आप को गलतफहमी हो रही है. मेरी मम्मी का नाम तो दीपिका सत्यनारायण है. वे तो कोविड ट्रीटमैंट के लिए आप के नर्सिंगहोम में भरती हैं. मेरी मम्मी अपने मातापिता की इकलौती संतान थीं," सत्यदीप ने अपनी बात एक ही सांस में कह दी. स्पष्टतौर पर यह बूआ शब्द का विरोध ही था.

"हां सत्यदीपजी, मैं जानता हूं. बूआजी का ही नाम दीपिका, उन के पति का नाम सत्यनारायण और आप का नाम दोनों को मिला कर सत्यदीप रखा गया है. मैं यह भी जानता हूं कि आप उम्र में मुझ से बड़े हैं तथा लगभग 20 बरसों से यूएसए में रह रहे हैं. अब्रौड जाने के लगभग 2 साल बाद ही आप की शादी हो गई थी और आप शादी के तुरंत बाद ही भाभीजी को ले कर स्टेट्स चले गए थे.

"उसी साल आप के पिताजी का देहांत हो गया था. चूंकि आप उस साल अपनी शादी के लिए काफी छुट्टियां ले चुके थे, सो आप लोगों के लिए 15 दिनों से अधिक रुकना संभव नहीं था. उस के अगले साल ही आप की पत्नी प्रैग्नैंट हो गई और अपनी सुरक्षा, हाईजीन व बच्चे के लिए विदेशी नागरिकता के दृष्टिकोण से वहीं पर डिलीवरी करवाने का निर्णय लिया. यद्यपि बूआजी आप की सहायता के लिए वहां गई थीं और लगभग 6 महीने तक आप लोगों के साथ रहीं भी मगर उन्हें वहां का क्लाइमेट और कल्चर सूट न होने के कारण फिर कभी वे उस देश में नहीं गईं हालांकि आप ने उन्हें कई बार बुलाया.

"उस के बाद आप का 4 बार इंडिया आना हुआ. मगर हर बार आप अपनी ससुराल के किसी न किसी फंक्शन को अटैंड करने के लिए ही आए थे. साथ ही. आप इंडिया के टूरिस्ट प्लेसेस को घूमने का प्रोग्राम भी बना कर आए थे. इसी कारण बूआजी से आप की मुलाकातें अपेक्षाकृत संक्षिप्त ही हुआ करती थीं," डाक्टर दीपक बोल रहे थे.

"आप मेरे बारे में इतना कुछ कैसे जानते है? क्या आप का कोई रिलेटिव, मेरा मतलब है मम्मी या पापा भी उस सरकारी स्कूल में सर्विस करता था जहां पर मम्मी थीं?" सत्यदीप ने आश्चर्य से पूछा.

"जी नहीं. मेरी बूआजी के परिवार में एंट्री उस समय हुई जब आप के पिताजी के देहांत को 6 महीने हो चुके थे और अपने इतने बड़े घर में

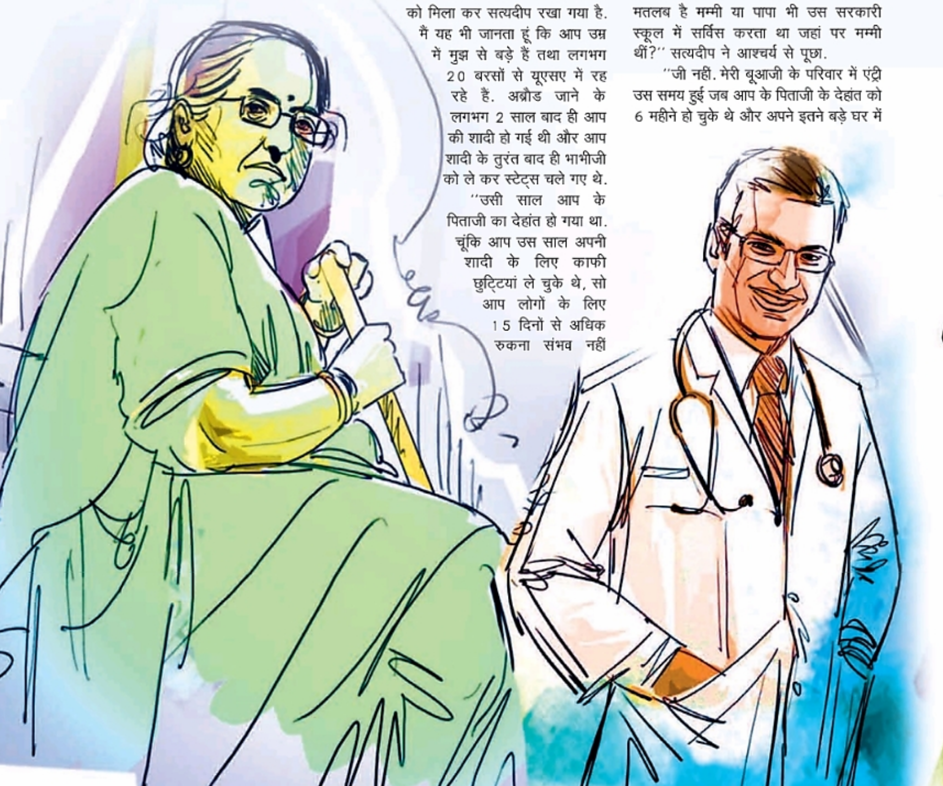

अपना अकेलापन दूर करने के लिए घर के एक हिस्से, जिस में एक बैडरूम, किचन था, को किराए पर देने का निर्णय लिया. उन दिनों मैं और मेरी पत्नी दोनों ही यहां के सरकारी हौस्पिटल में ट्रांसफर हो कर आए थे.

''घर दिखाते समय बूआजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि वे घर को किसी भी आर्थिक मजबूरी के कारण किराए पर नहीं दे रही हैं और न ही वे किराएदार रख रही हैं बल्कि वे तो अपने दुखसुख बांटने के लिए अपना परिवार बढ़ा रही हैं. उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान बाजारभाव से इस जगह का किराया 5 हजार रुपए प्रतिमाह होता है लेकिन आप को जो भी उचित लगे, आप दे दीजिएगा.

''उस के बाद हम उस घर में बूआजी के साथ लगभग साढ़े 5 साल तक रहे. सरकारी नौकरी छोड़ कर नर्सिंगहोम डालने की रूपरेखा में बूआजी ने सक्रिय सहयोग दिया. हमारे परिवार की पहली व एकमात्र डिलीवरी भी उसी घर में हुई. अपने बच्चे की देखभाल के लिए उन्होंने हमें कभी भी आया नहीं रखने दी. दलील देती थीं कि बड़े होने के बाद तो बच्चों की अपनी मजबूरियां होंगी और वे हमारे साथ रह पाएं या नहीं, सभी कुछ परिस्थितियों पर निर्भर करेगा. हम आज से ही क्यों अपने बच्चों को व्यावसायिक हाथों में सौंपे.

''हमारे बच्चे के सभी काम उन्होंने पूरी प्रसन्नता और मनोयोग से किए. कभीकभी विशेष परिस्थितियों में हम दोनों को ही नाइट शिफ्ट में जाना पड़ता था, ऐसे में बूआजी सारी रात बच्चे को अपने साथ ही रखतीं व संभालती थीं.

''किराए के घर में प्रवेश के पहले दिन जब हम रहने पहुंचे तो शिष्टाचारवश मैं ने उन्हें मम्मीजी कह दिया तो तुरंत उन्होंने प्रतिकार करते हुए कहा कि यह संबोधन मैं सत्यदीप के अलावा किसी और के मुंह से सुनना नहीं चाहती हूं. यह अधिकार सिर्फ और सिर्फ सत्यदीप का है.

''मेरे विचार से वे आप से बहुत अधिक स्नेह करती थीं और आप को एक क्षण के लिए भी भूलना नहीं चाहती थीं. वे यह भी नहीं चाहती थीं कि वे किसी और की औलाद को अपना लें.

''तब आप को क्या कहूं? मैं ने कुतूहल से पूछा था तो उन्होंने कहा था कि 'तुम दोनों ही मुझे बूआ कह सकते हो क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि एक स्त्री को अपने भाई के बच्चे अपने खुद के बच्चों से भी अधिक प्रिय होते हैं. बूआ का संबंध अपने भतीजेभतीजियों से ज्यादा निकट होता है और दोनों तरफ से विचारों का आदानप्रदान सम्मानपूर्वक व सुगम होता है.'

'बिलकुल सही बूआजी. मैं अपनी बूआ की गोद में सिर रख कर सो भी जाती हूं और उन के साथ ताश व अंत्याक्षरी भी खूब खेलती हूं. जो बात मैं अपने मातापिता से नहीं कह पाती हूं वह बूआ के माध्यम से उन तक पहुंचा देती हूं.' मेरी पत्नी बीच में बोली.

''अब स्थिति यह है कि मेरा बेटा भी उन्हें दादी न कह कर बूआजी ही कहता है. मेरा नर्सिंगहोम खुलने के बाद अनिवार्यता के दृष्टिकोण से अपना निवास यहीं बनवा लिया. मगर बूआजी से संपर्क निरंतर बना रहा.

''मैं अकेला नहीं, बल्कि मेरे बाद आने वाले अन्य 5 किराएदार भी उन्हें बूआजी कह कर पुकारते हैं और वे घर के सभी सदस्यों से ज्यादा सम्माननीय भी हैं. उन सभी लोगों को सूचित भी कर दिया गया है. आप देखेंगे कि अभी कुछ ही समय में सभी लोग यहां पहुंच चुके होंगे.''

''मगर अभी तो कोरोना प्रोटोकौल चल रहा है. ऐसे में कौन अपनी जान जोखिम में डालेगा?'' सत्यदीप हैरानी से बोला.

''अरे साहब, बूआजी ने हम सभी की एक बार नहीं, बल्कि कई बार इस तरह की मदद की है कि उन का कर्जा उतारना कम से कम इस जन्म में तो हमारे लिए संभव नहीं है. कोरोना से भी बड़ी कोई महामारी हो, तब भी हम 6 लोग तो बेझिझक वहां पर पहुंच ही जाते,'' डाक्टर बोले, ''और हां, नर्सिंगहोम के अकाउंटैंट से मैं ने सिर्फ आप को सूचना देने के लिए बोला था, आप से पैसे मंगवाने के लिए बिलकुल भी नहीं बोला गया था. वह तो साधारण पेशेंट के साथ जैसा व्यवहार करता है, उसी प्रकार उस ने आप के साथ भी कर दिया. वैसे, उस की गलती है भी नहीं क्योंकि यह तो उस की ड्यूटी का एक हिस्सा है. आप के द्वारा भेजा गया पैसा वापस आप के अकाउंट में ट्रांसफर किया जा रहा है.''

अब तक बाकी के पांचों किराएदार भी पहुंच चुके थे. वर्तमान किराएदार ओमप्रकाश तो लगातार रोए जा रहे थे. आंसू तो सभी की आंखों में थे जो बूआजी के प्रति स्नेह व आदर दिखाने के लिए पर्याप्त थे.

तभी बतलाया गया कि बूआजी के मृत शरीर को अंत्येष्टि के लिए ले जाया जा रहा है. कोरोना प्रोटोकौल के अंतर्गत सिर्फ 5 व्यक्ति ही जा सकते थे और वह भी सिर्फ पंचनामे पर साइन करने के लिए.

सत्यदीप तो परिवार का सदस्य था, सो उस का जाना तो अनिवार्य था ही लेकिन बाकी 6 में से कोई भी बूआजी का साथ अंतिम समय में छोड़ने को तैयार नहीं था, यह जानते हुए भी कि यह एक तरह का रिस्क है.

आखिरकार 2 व्यक्ति ऐसे व्यक्ति के साथ गए जिन के अपने तक उन की अंतिम क्रिया में जाने को तैयार नहीं थे. बूआजी का क्रियाकर्म कर के लौटते समय सत्यदीप बोला, ''मुझे आप लोगों की बातें सुन कर और आप लोगों के व्यवहार को देख कर ऐसा लगता है जैसे मैं ने अपनी मम्मी के साथ न रह कर बहुत बड़ी गलती कर दी है जिस का पश्चात्ताप मुझे जिंदगीभर रहेगा.'' उस की आंखें नम थीं.

''नहींनहीं सत्यदीपजी, ऐसी कोई बात नहीं है. बूआजी को आप से कभी कोई शिकायत नहीं थी. वे आप की मजबूरियों को बहुत अच्छे से समझती थीं. दूसरे, सत्यदीपजी, एक बात और है न, जो चीज हमारे पास होती है उसे हम हमेशा कमतर ही आंकते हैं. शायद इसी कारण से बूआजी की तारीफें सुन कर आप ऐसा समझ रहे हैं. आप की जगह हम सब में से भी यदि कोई होता तो वह भी वही करता जो आप कर रहे हैं. जीवनयापन की सब की अपनीअपनी विवशताएं हैं,'' डाक्टर दीपक सत्यदीप के कंधे पर हाथ रख कर सांत्वना देते हुए बोले. ●

बौलीवुड buzz

फिल्म निर्माता बनी परिणीति चोपड़ा

बौलीवुड में कलाकारों द्वारा अभिनय के साथ निर्माण व निर्देशन के क्षेत्र में उतरने का सिलसिला बढ़ता ही जा रहा है. अनुष्का शर्मा, प्रियंका चोपड़ा, दीपिका पादुकोण और कंगना रानौत के बाद अब अभिनेत्री परिणीति चोपड़ा भी अपना प्रोडक्शन हाउस खोल कर फिल्म निर्माण के क्षेत्र में उतरने जा रही हैं. वैसे निर्माता बनने के लिए परिणीति चोपड़ा के पास अपनी वजहें हैं.

वे कहती हैं, ''मैं निर्माण के क्षेत्र में नहीं उतरना चाहती थी, पर मैं निर्मात्री बन रही हूं क्योंकि अभिनेत्री के तौर पर कई बार कहानी के लिए जिस तरह का बजट व कलाकार चाहिए, वे नहीं मिलते हैं. मैं मानती हूं कि इन दिनों जिस तरह से बौक्स औफिस पर कमाई हो रही है, उसी के अनुरूप बजट पर फिल्में बनाना आवश्यक हो जाता है. इसलिए 'साइना', 'संदीप और पिंकी फरार' तथा 'गर्ल्स औन द ट्रेन' के समय से ही मैं ने इस बात की तैयारी करनी शुरू कर दी थी कि मेरे नाम पर फिल्म बिक सके और उसी का विस्तार फिल्म निर्माण है. मुझे ऐसा कंटैंट बनाना है जो अब तक किसी ने न बनाया हो.''

विद्या बालन की 'जलसा' एमेजौन पर

कोविड–19 का असर लगभग हर कलाकार पर पड़ा है, मगर इस की सब से बड़ी मार अभिनेत्री विद्या बालन पर पड़ी है. कोविड–19 की वजह से पिछले 2 वर्षों से उन की एक भी फिल्म सिनेमाघर में नहीं पहुंच पाई. इस बीच उन की फिल्म 'शकुंतला देवी: द ह्यूमन कंप्यूटर' और 'शेरनी' ओटीटी प्लेटफौर्म पर ही स्ट्रीम हुईं और अब उन की तीसरी फिल्म 'जलसा' भी ओटीटी प्लेटफौर्म एमेजौन प्राइम वीडियो पर मार्च में आने वाली है.

समाज में व्याप्त वर्गभेद की पृष्ठभूमि पर आधारित रोमांचक फिल्म 'जलसा' में विद्या बालन और शेफाली शाह की जोड़ी नजर आएगी. यह एक चुभने वाली मानवीय कहानी है. शक्तिशाली पात्रों और अनिश्चित परिस्थितियों की एक अनूठी कहानी के साथ यह फिल्म दर्शकों को रोमांचित करने वाली है. इस में विद्या बालन एक टीवी समाचार एंकर की भूमिका में और शेफाली छाया उन की नौकरानी के किरदार में नजर आएंगी. सबकुछ ठीक है, पर टीवी एंकर के बेटे की एक दुर्घटना में मृत्यु के बाद क्या होता है, वही मूल कहानी है.

'तुम्हारी सुलु' फेम निर्देशक सुरेश त्रिवेणी द्वारा निर्देशित इस फिल्म के संवाद लेखक अब्बास हुसैन दलाल, लेखक सुरेश और प्रज्ज्वल चंद्रशेखर हैं. फिल्म के अन्य कलाकार हैं रोहिणी हट्टंगड़ी, इकबाल खान, गुरपाल सिंह, विधात्री बंदी, मोहन कौल व अन्य.

इरफान खान की याद में

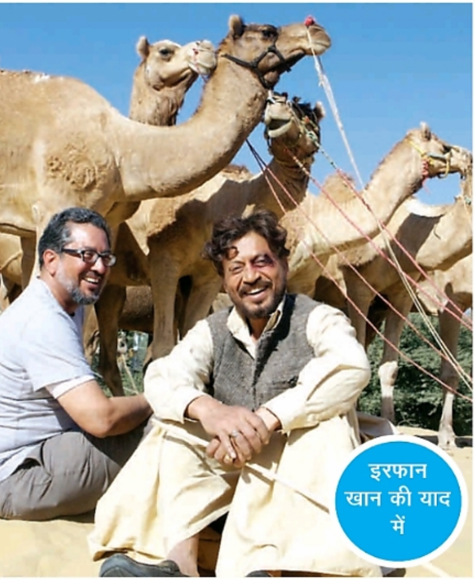

'द नेम औफ रिवर' (2003), 'किस्सा : द टेल औफ ए लोनली घोस्ट' (2013) और 'द सौंग औफ स्कौर्पियंस' (2017) का निर्माण करने वाले अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त फिल्मकार अनूप सिंह की आखिरी 2 फिल्में इरफान खान के साथ थीं. इरफान खान ने अनूप सिंह निर्मित 2 अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित फिल्मों 'किस्सा : द टेल औफ ए लोनली घोस्ट' और 'द सौंग औफ स्कौर्पियंस' में अभिनय किया था. इन फिल्मों के निर्माण के दौरान अनूप सिंह व इरफान के बीच जो दोस्ती का रिश्ता विकसित हुआ उसे अनूप सिंह ने अपनी किताब 'इरफान : डायलौग्स विद द विंड' में साझा किया है.

इरफान खान का 29 अप्रैल, 2020 को दुखद व असामायिक निधन हो गया था. मगर 7 जनवरी को इरफान खान के 54वें जन्मदिन के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलिस्वरूप इस फिल्म को लोगों के सामने पेश किया गया. कौपर कौइन द्वारा प्रकाशित पुस्तक आधिकारिक तौर पर 14 फरवरी को बाजार में आएगी. इस संस्मरण वाली किताब की प्रस्तावना 'पीकू' सहित कई फिल्मों में इरफान के साथ अभिनय कर चुके अमिताभ बच्चन ने लिखी है.

एक फिल्मकार और एक दोस्त के रूप में दिवंगत अभिनेता के साथ अपने गहरे बंधन के बारे में बात करते हुए फिल्म निर्माता अनूप सिंह कहते हैं, ''इस किताब का जन्म जबरदस्त दुख से हुआ. लेकिन याद रखने और लिखने में जो भीतर से खुद को संतुष्टि देता है, वह है ऐसे विलक्षण व्यक्ति और अभिनेता को जानने व उन के साथ काम करने का आनंद. यह पुस्तक एक अद्‌भुत व्यक्ति, एक समर्पित मित्र और एक कलाकार का उत्सव है, जो हमें इस बात की गहराई में ले गया कि आज हमारी दुनिया में एक इंसान होने का क्या अर्थ है.''

अब आयुष्मान खुराना की इमेज बदलेंगे आनंद एल राय

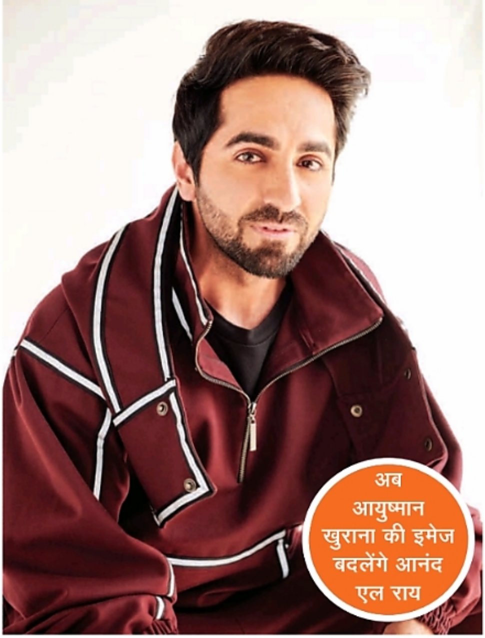

लीक से हट कर और समाज में हौआ समझे जाने वाले विषयों पर आधारित फिल्मों को अपने अभिनय से संवार कर अपनी अलग पहचान बना चुके अभिनेता आयुष्मान खुराना अब ऐक्शन फिल्म में अभिनय कर अपनी इमेज बदलने जा रहे हैं. उन की इमेज को बदलने का बीड़ा फिल्म सर्जक आनंद एल राय ने उठाया है.

आयुष्मान खुराना को ले कर आनंद एल राय एक ऐक्शनप्रधान फिल्म 'ऐन ऐक्शन हीरो' का निर्माण कर रहे हैं, जिस का निर्देशन नवोदित निर्देशक अनिरुद्ध अय्यर कर रहे हैं. बहुत जल्द इस फिल्म को लंदन में फिल्माया जाएगा. अब तक आनंद एल राय भारत में ही फिल्माई जाने वाली देसी विषयों पर फिल्में बनाते आए हैं, पर पहली बार वे भी विदेश में शूटिंग करने वाले हैं. शायद 'जीरो' और 'अतरंगी रे' जैसी फिल्मों की असफलता से उन का आत्मविश्वास हिल गया है.

इस नई फिल्म के संदर्भ में आनंद एल राय कहते हैं, ''हमारे देश में आयुष्मान खुराना एक बुद्धिमान कलाकार हैं. वे हमारे साथ फिल्म 'शुभ मंगल ज्यादा सावधान' कर चुके हैं. हम ने उन्हें अपनी फिल्म 'ऐन ऐक्शन हीरो' में जोड़ा है. यह फिल्म उन के कैरियर में गेमचेंजर बनने वाली है. यह फिल्म उन के अभिनय को एक नया डायमैंशन देगी.'' वैसे अभी तक इस फिल्म को ले कर आयुष्मान खुराना ने चुप्पी साध रखी है.

लवीना और पलक ने रखा लघु फिल्म में कदम

'जोधा अकबर', 'नागिन', 'बालवीर', 'प्यार तू ने क्या किया' जैसे सीरियलों में हुनर दिखा चुकीं लवीना टंडन तथा 'बड़ी देवरानी', 'ये रिश्ते हैं प्यार के' और 'मेरी हानिकारक बीवी' जैसे सीरियलों में हुनर दिखा चुकीं पलक परसवानी ने अब एक कदम आगे बढ़ते हुए लघु फिल्मों के क्षेत्र में कदम रखा है. जी हां, पहली बार ये दोनों एकसाथ लघु फिल्म 'रूममेट्स' में दिखाई दे रही हैं. जिस में इन दोनों की मस्ती और खटपिट वाली कैमिस्ट्री दिखाई दे रही है. कहानी के अनुसार इस फिल्म में पलक, लवीना को हर काम में रोकटोक करती है. पलक की बातों से तंग आ कर लवीना एक दिन पलक को ऐसा जवाब देती है कि पलक को दिन में तारे नजर आ जाते हैं.

'मेड इन इंडिया' और 'स्काई 24×7' के तहत बन रही संतोष गुप्ता निर्मित इस लघु फिल्म के निर्देशक रोशन गैरी भिंडर व लेखक सौम्या श्रीनाथ हैं.

Sky247
Sky247 PRESENTS
ROOMMATES
DIRECTED BY ROSHAN GARRY BHINDER
PRODUCER SANTOSH GUPTA
Sky247
MADE IN INDIA PICTURES PRESENTS
ROOMMATES
DIRECTED BY ROSHAN GARRY BHINDER
PRODUCER SANTOSH GUPTA

दुलकुएर सलमान भी चले ओटीटी की तरफ

राज एंड डीके की वैब सीरीज में दिलजीत दोसांझ की जगह लेंगे दुलकुएर सलमान. दक्षिण भारत के मशहूर अभिनेता ममूटी के बेटे और मूलतया मलयालम सिनेमा के स्टार कलाकार दुलेकर सलमान ने सिनेमा जगत में अच्छी पहचान बनाई है. दर्शक उन्हें 'कारवां' और 'द जोया फैक्टर' जैसी हिंदी फिल्मों में भी देख चुके हैं.

10 वर्षों के कैरियर में वे 35 फिल्मों में अभिनय व कुछ फिल्मों का निर्माण भी कर चुके हैं. इन दिनों दुलकेर सलमान मशहूर निर्देशक आर बाल्की की हिंदी फिल्म 'चुप' भी कर रहे हैं. लेकिन अब वे राज एंड डीके के निर्देशन में ओटीटी पर कदम रख रहे हैं. वे राजकुमार राव और आदर्श गौरव के साथ नैटफ्लिक्स की एक वैब सीरीज भी कर रहे हैं.

दुलकुएर सलमान का कहना है कि उन्हें किसी भी माध्यम से कोई एलर्जी नहीं है. पिछले 2 वर्षों में उन्हें कई वैब सीरीज के औफर मिले, पर उन की विषयवस्तु व कहानियां उन्हें पसंद नहीं आईं. लेकिन जैसे ही राज एंड डीके ने उन्हें हास्य व रोमांच प्रधान अनाम वैब सीरीज का औफर दिया तो इस की कहानी ने उन्हें इस से जुड़ने को प्रेरित किया.

मजेदार बात यह है कि इस वैब सीरीज में पहले मुख्य किरदार दिलजीत दोसांझ निभा रहे थे. कुछ वजहों से दिलजीत दोसांज ने खुद को इस सीरीज से अलग कर लिया, तब उसी मुख्य किरदार के लिए दुलकुएर सलमान जुड़े हैं.

अनूठी शख्सियत किरण राज

बौलीवुड के कलाकारों और दक्षिण भारत के कलाकारों में जमीन आसमान का अंतर है. बौलीवुड से जुड़े कई कलाकार सौ से डेढ़ सौ करोड़ प्रतिफिल्म कमा रहे हैं. मगर वे किसी की एक पैसे की भी मदद नहीं करते हैं. जबकि दक्षिण भारत का लगभग हर कलाकार अपनी आय का कुछ हिस्सा समाज के जरूरतमंदों के लिए खर्च करता रहता है.

मसलन, अभिनेता सुदीप उर्फ किच्चा सुदीप को ही लें. उन्होंने शिवमोगा में वृद्धाश्रम व अनाथ बच्चों के लिए 2 स्कूल चलाने से ले कर 2 गांवों को गोद ले रखा है. इसी तरह एक 28 वर्षीय कन्नड़ व हिंदी फिल्म व टीवी इंडस्ट्री के लोकप्रिय अभिनेता, मौडल, एंटरप्रन्योर, खिलाड़ी, फिलांथ्रोपिस्ट किरण राज हैं. दर्शक उन्हें कई कन्नड़ फिल्मों व हिंदी फिल्म 'बेखुदी' में देख चुके हैं. किरण राज 'हीरोज', 'लव बाय चांस', 'यह रिश्ता क्या कहलाता है', 'तू आशिकी' जैसे हिंदी सीरियलों में अभिनय कर छोटे परदे पर काफी नाम कमा चुके हैं.

वैसे, किरण राज सिर्फ अभिनेता ही नहीं, बल्कि व्यवसायी भी हैं. वे बचपन में एस्ट्रोनौट बनना चाहते थे. वे कहते हैं, ''मैं बचपन में एस्ट्रोनौट बनना चाहता था. मैं ने एस्ट्रोनौट को ले कर काफी किताबें पढ़ी थीं. मैं कार रेसिंग में भी हिस्सा लेता था. मुझे वर्चुअल रेसिंग गेम पसंद हैं. मेरा बेंगलुरु में अपना 'डीओटी' यानी 'डाइट औन टेबल' नामक होटल है. जरूरतमंदों की मदद करने के लिए मैं ने एनजीओ 'केयर फाउंडेशन' शुरू किया है. इस के तहत हम बेघर बच्चों को शिक्षा दिलाने का काम करते हैं.''

–शांतिस्वरूप त्रिपाठी ●

प्रेम समस्याएं

मेरी उम्र 25 वर्ष है. कालेज की पढ़ाई खत्म कर के अच्छे पैकेज में मेरी प्राइवेट जौब लग गई. मेरी बौस 35 वर्षीया, अनमैरिड हैं और उन के साथ काम करतेकरते हमारे बीच काफी नजदीकियां आ गई हैं. वे मुझे सुबह औफिस के लिए घर से पिक करती हैं और शाम को मुझे घर पर ड्रौप भी करती हैं. शौपिंग व अपने अन्य कामों के लिए मुझे साथ ले जाती हैं. मुझे भी वे अच्छी लगती हैं.

लाइफ में पहली बार मैं किसी की ओर इतना आकर्षित हुआ हूं. मेरा तो मन करता है कि मैं उन से शादी कर लूं. मुझे पूरा यकीन है कि वे भी मुझे पसंद करती हैं लेकिन मुझ से बोलते हुए उन्हें शायद झिझक हो रही है क्योंकि एक तो वे मेरी बौस हैं, दूसरा, मैं उम्र में उन से 10 साल छोटा हूं. मुझे इन सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन शायद उन्हें पड़ता है, तभी तो मुझ से शायद अपने प्यार का इजहार नहीं कर रहीं. लेकिन अब मैं और नहीं रुक सकता. क्या मेरा ऐसा करना ठीक रहेगा? कहीं मैं कोई गलती तो नहीं कर रहा?

आप एडल्ट हैं और अपनी जिंदगी का फैसला लेने का आप को पूरा हक है. लेकिन जल्दबाजी में किया कोई भी फैसला आप की जिंदगी को उलझा कर रख सकता है.

वह महिला आप की बौस है और उम्र में 10 साल बड़ी है. आप उस के अंडर में काम करते हैं. आप पर और्डर चलाने का उस के पास राइट है या हम यह कह सकते हैं कि प्राइवेट जौब में यह सब होता है. आप की बौस आप के काम से खुश हो, इसलिए हो सकता है कि आप की सहूलियत को ध्यान में रखते हुए वह आप को औफिस के लिए पिक एंड ड्रौप भी कर देती है.

एक बात और गौर करने की है. यदि वह आप से सहज है तो इस के कारण हो सकते हैं कि आप उस से 10 साल छोटे हैं और वह आप की बौस है. इसलिए वह आप के साथ खुल कर बात कर लेती है और आप के साथ कहीं आनेजाने में कोई दिक्कत महसूस नहीं करती क्योंकि वह आप को डोमिनेट कर सकती है.

आप को लगता है कि वह आप को पसंद करती है तो जनाब पसंद करने का यह मतलब तो नहीं कि वह आप पर मरमिटी है. पसंद करना और किसी से प्यार करना 2 अलगअलग बातें हैं.

आप की बौस आज की मौडर्न और खुली सोच की महिला लगती है इसलिए वह जो भी कर रही है, खुलेतौर पर कर रही है. आप का उस की तरफ आकर्षित होना कोई नई बात नहीं है.

अकसर लड़कों को अपनी से बड़ी उम्र और इस टाइप की मौडर्न लेडीज अट्रैक्ट करने लगती हैं. यह नैचुरल है, पुरुषों के स्वभाव में ऐसा होता है. लेकिन हम तो आप को यही राय देंगे कि प्लीज, आप जरा अपने मन को कंट्रोल में रखें. अपनी बौस के आगे अपने प्यार का इजहार करने की गलती हरगिज मत करिए क्योंकि आप बिलकुल भी श्योर नहीं हैं कि वह आप को लाइक करती है तो किस हद तक.

आप अपनी प्रोफैशनल लाइफ को खतरे में मत डालिए. अभी आप के कैरियर की शुरुआत है. काम पर अपने पांव मजबूत बनाएं. जब तक आप श्योर न हो जाएं कि बौस के मन में क्या है तब तक जैसा चल रहा है, चलने दें. अपनी तरफ से कोई पहल करने की कोशिश मत कीजिए.

कुछ दिन हुए इंस्टाग्राम पर मेरी दोस्ती एक लड़की से हो गई. हम दोनों हमउम्र यानी 23 साल के हैं. हम दोनों के बीच अच्छीखासी चैटिंग शुरू हो गई थी. मैं बहुत खुश था क्योंकि उस की बातों से ही मैं उस पर फ्लैट होने लगा था. लेकिन पता नहीं क्यों, अचानक उस ने मेरे मैसेज का रिप्लाई देना बंद कर दिया है. मैं बहुत परेशान हूं. क्या करूं?

आजकल फास्ट फौरवर्ड का जमाना है. लड़केलड़कियां जितनी जल्दी एकदूसरे से सोशल साइट पर मिलते हैं, चैटिंग करते हैं उतनी ही जल्दी ड्रौबैक भी कर लते हैं.

उस लड़की ने शुरू में तो आप से खूब चैट की लेकिन अब एकदम से उस ने चैटिंग बंद कर दी है, हो सकता है कोई वजह हो. कई बार लड़के हद से ज्यादा चैटिंग करने लगते हैं, जिसे लड़कियां शुरू में तो बरदाश्त कर लेती हैं लेकिन बाद में उन्हें चिढ़ लगने लगती है. ऐसे लड़कों से वे बचना चाहती हैं जो, बस, बात करने के लिए मैसेज पर मैसेज भेजने लगते हैं.

कुछ लड़केलड़कियों को इंप्रैस करने के लिए बिना बात के जानबूझ कर इंग्लिश झाड़ने लगते हैं जो कई लड़कियों को पसंद नहीं आता.

कई बार कई लड़के लड़कियों की जरूरत से ज्यादा तारीफ करने लगते हैं जो लड़कियों को बिलकुल अच्छी नहीं लगती क्योंकि हर लड़की को पता होता है कि वह दिखने में कैसी है और उस की क्या चीज दूसरे को अट्रैक्ट कर सकती है या नहीं कर सकती. इसलिए बेमतलब की बटरिंग लड़कियों को कई बार हजम नहीं होती.

कई बार यह भी होता है कि लड़की को अपने मैसेज का रिप्लाई ठीक से नहीं मिलता तो वह गुस्से में चैटिंग बंद कर देती है.

कुछ ये वजहें हम ने आप को बताई हैं, आप गौर करें, कहीं इन में से कुछ तो नहीं हुआ आप दोनों के बीच.

एक कारण और भी हो सकता है कि वाकई वह कुछ बिजी हो गई हो या कोई ऐसी घटना हो गई हो कि जिस से वह अपना समय वहां लगा रही हो. ऐसा कुछ होगा तो वह खुद आप को मैसेज करेगी. ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं. उसे कुछ वक्त दें रिप्लाई करने का. आप भी अपना ध्यान दूसरी तरफ लगाने की कोशिश करें और भी काम हैं दुनिया में चैटिंग के सिवा, मेरे दोस्त.

मेरी उम्र 18 साल है. कुछ दिनों से मेरा बौयफ्रेंड मुझे इग्नोर कर रहा है. पूछने पर न तो कोई कारण बता रहा है और मेरे मैसेज का जवाब भी नहीं दे रहा. क्या करूं समझ नहीं आ रहा. मैं उसे बहुत चाहती हूं. उस के बिना जीना मुश्किल हो रहा है. कुछ रास्ता सुझाइए मुझे, वरना मैं कुछ कर लूंगी.

अरे, इतनी सी बात पर आप जान से खेल जाएंगी. क्या इतनी सस्ती है आप की जिंदगी. इस रिलेशनशिप में यह सब चलता रहता है. देखिए, सब से पहले यह ड्रागड़ा आप के कारण हुआ हो तो उसे सौरी कह दें. ज्यादा इग्नोर कर रहा है तो कुछ दिन आप भी उस से बात न करें. कुछ दिन इंटरनैट कनैक्शन और मोबाइल औफ कर दें. अपने किसी कौमन फ्रेंड से जानने की कोशिश करें कि वह आप को इग्नोर क्यों कर रहा है. लेकिन प्लीज उस के लिए रोना बंद करें. ●

SMS/WHATSAPP +918527666772

आप अपनी प्रेम समस्याएं, संपादकीय विभाग, मुक्ता, दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, रानी झांसी मार्ग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 पर भेजें. SMS/Whatsapp से भी भेज सकते हैं. ईमेल द्वारा mukta@delhipress.in पर भेजें. नाम गुप्त रखा जाएगा.

स्टाइलिश बूट्स का ट्रैंड

हैलो गौर्जियस, अपनी वैस्टर्न ड्रैसेज को और भी शानदार बनाना चाहती हैं तो स्टाइलिश लुक बूट्स कैरी कर के देखें. पैरों को एंकल्स तक कवर करते ये बैस्ट क्वालिटी के बूट्स कंफर्टेबल, ट्रैंडी और स्टाइलिश हैं.

मार्केट में ये कई मैटेरियल में उपलब्ध हैं. जिपर क्लोजर और साइड में बकल डिजाइन और परफैक्ट साइज की हील जब स्किनी फिट जींस के साथ कैरी करेंगी तो आप को परफैक्ट लुक देंगे.

प्रीमियम लुक वाले इन बूट्स की फिनिशिंग काफी बढ़िया है और इन का टर्निंग लेदर लुक आप की अपीयरैंस को और भी रिच बनाएगा.

इन बूट्स में आप को ट्रैंड और कंफर्ट का परफैक्ट ब्लैंड मिलेगा. इसे किसी भी जगह और मौके पर पहनें. वौकिंग, वर्किंग, कैजुअल, शौपिंग, ट्रैवल, ड्राइविंग करते वक्त इन का साथ आप को कंफर्ट फील कराएगा.

–किरण आहूजा ●

पिछला प्रेम और सैक्स

लेख • नसीम कोचर

प्रेम, विछोह और पुनर्मिलन के परंपरागत कौन्सैप्ट से दूर रंगीन परदे पर अब लव, सैक्स और धोखे का तड़का ही ज्यादा नजर आता है. आजकल इंस्टैंट लव और उस के बाद इंस्टैंट सैक्स नैटफ्लिक्स, प्राइम वीडियो के जरखरीद प्लेटफौर्मों का ट्रैंड बन गया है.

प्रेम आधारित शो में वासना, कामुकता, स्वार्थ और धोखे का रंग ज्यादा नजर आता है. उन में समर्पण, विश्वास, संयम, प्रेम जैसी भावनाएं नहीं बल्कि बिंदासपन हावी है.

हिंदी सिनेमा ने प्यार पर आधारित बेहतरीन फिल्में दी हैं. 'मुगलेआजम', 'पाकीजा', 'लैला मजनू', 'सोनी महिवाल' जैसी फिल्मों को याद करिए. उस परंपरा से बिलकुल अलहदा आज की फिल्में या धारावाहिक प्यार और सैक्स की सीमाओं को तोड़ते नजर आते हैं.

प्यार का अर्थ है सैक्स और तृप्ति, जो बैडरूम की सीमा से बाहर भी कहीं भी हो सकता है. अब हर शो में कन्फ्यूज्ड प्रेमियों की कहानी परोसी जा रही है, जो तार्किक रूप से रिश्तों के साथ इंसाफ नहीं कर पाती. असलियत यह है कि आज की फिल्में व शो रिश्तों को ज्यादा छिछला बना रहे हैं. ये प्यार और सैक्स जैसी बेशकीमती भावना को बहुत हलका कर रहे हैं.

'मनमरजियां' ऐसी हिंदी फिल्म थी जिस में प्यार की कहानी टिंडर और फेसबुक से शुरू हुई थी. उस के बाद प्रेमीप्रेमिका छिपछिप कर मिलने लगते हैं. उन का मिलन अपनी सारी हदें लांघ जाता है. विवाहपूर्व शारीरिक संबंधों पर दोनों को कोई एतराज नहीं, बल्कि वे इसे ही प्यार समझते हैं. लड़की के परिवार वाले उसे रंगेहाथों पकड़ भी लेते हैं, लेकिन प्यार को हलके में लेने वाले, गैरजिम्मेदार और लापरवाह लड़के के लिए शादी कर के जिम्मेदारी लेना एक आफत होती है. इस तरह के लड़के कहते हैं कि प्यार के लिए शादी की क्या जरूरत. मगर लड़कियां आज भी प्रेमी से कमिटमैंट चाहती हैं. कमिटमैंट पर वे उस के साथ भागने को भी तैयार हो जाती हैं.

लड़कियों को जब एहसास होता है कि प्रेमी जिम्मेदार साथी बनने के लायक नहीं है क्योंकि उस की जेब खाली है और भविष्य में उसे जीवनयापन के लिए

'लव, सैक्स और धोखा' यह सिर्फ फिल्मी लफ्फाजी नहीं, आजकल युवाओं की जिंदगी इन्हीं 3 शब्दों के इर्दगिर्द है. रिश्तों की जरूरत को न समझने की आदत अब हमारे जीवन का हिस्सा बन रही है, जिस से रिश्ते कमजोर हो रहे हैं.

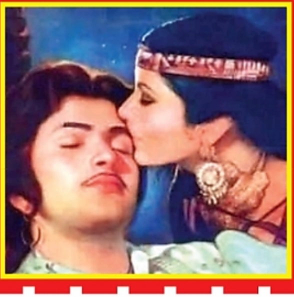

क्या करना है, इस की भी कोई रूपरेखा उस ने तैयार नहीं की है, तो उसे छोड़ कर उन्हें वापस लौटना पड़ता है.

इस के बाद उन के जीवन पर काला धब्बा पड़ा रहता है. उन्हें अपनी गलती का एहसास रहता है. उन्हें किसी भी नए जने से मिलने में हिचकिचाहट होती है. जिस रिश्ते में सीमाओं की गरिमा और परिवार की इज्जत की कोई परवा न हो और लड़की बिंदास जीवन जीने की आदी हो तो वह हमेशा उसी मोल्ड में वापस जाने को बेचैन रहती है जिस में पहला प्रेमी मिला था. परिवार तो साथ देते ही हैं चाहे उन की संतान कैसी भी हो.

शारीरिक सुख पाने की हवस में लड़की की आंखों पर ऐसा परदा पड़ जाता है कि वह अपने प्रेमी की असलियत नहीं समझ पाती. उस में इंसान की परख करने की क्षमता नहीं रहती है. वह बारबार नए आदमी के साथ हमबिस्तर होती है, वह भी खुलेआम. जबकि, लड़का उस से शादी कर के परिवार की जिम्मेदारी उठाने के लिए तैयार नहीं है और जो व्यक्ति उस से शादी कर के जिम्मेदारी उठाने को तैयार है, यानी पुराने साथी के प्रति भी वह वफादार नहीं रह पाती है.

हालांकि उस की और उस के प्रेमी के बीच शारीरिक संबंधों की जानकारी होने पर 'कोई बात नहीं' कह कर वह स्वीकार कर ले मगर जिस वफादारी की उसे अपने साथी से उम्मीद हो, वह उस पर भी खरा न उतरे तो जिंदगी फिर एक बोझ बन जाती है.

लड़कियों को ध्यान रखना चाहिए कि जिस के लिए प्यार का मतलब सिर्फ सैक्स है, वह उन के मतलब का नहीं. जिम्मेदारी लेना, रिश्तों को निभाना उस के बस में होना चाहिए. ऐसे लड़के कम होते हैं जो बेवफाई देख कर भी खामोशी ओढ़े रहें, उस के खून में जैसे कोई गरमी ही न हो, जैसे उस की रीढ़ की हड्डी न हो. दब्बू और कायर प्रेमी, जो अपनी प्रेमिका की तमाम गलत हरकतें देखते हुए भी खामोशी ओढ़े रहें, कम ही होते हैं. हर हाल में माफ करने और उस के साथ रहने को लालायित प्रेमी भी नहीं मिलते, याद रखें.

हमारे पुराण ऐसी कहानियों से भरे हैं जिन में ऋषिमुनि शारीरिक मिलन की बेताबी के आगे जगह और वक्त भी नहीं देखते, पर उस का खमियाजा ही लड़कियां भोगती रही हैं. आज भी वह बात बेटों में मौजूद है और ऐसे लड़कों की कमी नहीं. उन का प्रेम शारीरिक संबंध बनाने भर पर खत्म होता है.

प्रेमी महज डीजे है, जिस की कोई स्थायी कमाई नहीं है. बस 'खाओ, खेलो' के सिद्धांत पर चलने वाले लक्ष्यहीन और लापरवाह प्रेमी बहुत हैं. फिर भी उन्हें प्रेमिकाएं मिल जाती हैं. यहां तक कि उन्हें अपनी दूसरी प्रेमी के सामने प्यार का इजहार करने में कोई डर, झिझक या शर्मिंदगी नहीं होती. ऐसी लड़कियां भी कम नहीं हैं जो स्वार्थी हों और सिर्फ अपने मन की करने में विश्वास रखती हों, जिन्हें अपने परिवार की इज्जत की कोई परवा न हो. उन के आगे लौजिक की कोई लाइन नहीं खिंची है. उन्हें, दरअसल, लड़कों की परख नहीं है. यही वजह है कि वे बारबार अपने प्रेमियों से धोखा खाती हैं पर बारबार उन के साथ हमबिस्तर भी होती हैं क्योंकि उन्हें वही मोमैंट अच्छे लगते हैं.

शारीरिक प्यास बुझाने के बाद दोनों फिर कदम पीछे घसीट लें तो कोई बड़ी बात नहीं. यह व्यावहारिकता है पर बाद में यह दर्द देती है. रिश्तों की जरूरत को न समझने की आदत अब हमारे जीवन का हिस्सा बन रही है क्योंकि जीवन की गहराई समझाने वाला कोई नहीं है.

कितनी ही लड़कियां प्रेमी के चक्कर से नहीं छूटना चाहतीं. वे चोरीछिपे मिलती रहती हैं और शारीरिक संबंध बनाती रहती हैं चाहे दूसरा प्रेमी भी हो या शादी हो गई हो. दरअसल, उन्हें ट्रौफी गर्ल, जो ड्राइंगरूम की शोभा बनती है, रैस्तरां में दूसरे लड़कों में ईर्ष्या पैदा करती हैं, बनना अच्छा लगता है और वे इसे मानती हैं कि जीवन सफल हो गया. प्यार की जटिलताओं को समझने में सैक्स का तड़का ठीक नहीं, इस से जीवन स्थिर नहीं होता.

आज ऐसे परिवारों की गिनती बढ़ती जा रही है जहां परिवार के बुजुर्ग अपनी मनमरजी करने वाली बेटी या बेटे के कारण बारबार निराश व अपमानित होते हैं. अनिश्चितता से घिरी एक लड़की, जो सैक्स और प्रेम में विभेद न जाने, जिस के लिए परिवार की इज्जत और जिम्मेदारी कोई माने नहीं रखती है, कितनी दूर तक जीवन के पक्के रिश्ते को निभा पाएगी, यह सवाल उठ खड़ा हो जाता है.

एक नए समाज की शुरुआत तो हो गई है. पर न मर्ज पता है, न इलाज. अब यह आम है, बस इसे स्वीकार कर लो. इस के परिणाम की चिंता न करो. पतिपत्नी बन जाओ तो कैसे तनाव से दिन गुजरेंगे, तलाक होंगे, बच्चे भटकेंगे आदि की चिंता युवाओं को नहीं है. यह गलती है, भटकाव है क्योंकि आज की थोड़ी सेफ जिंदगी में भी जवानी 40–50 में ढलने लगेगी ही. उस के बाद के सालों में क्या होगा, यह 15–20 साल वालों को आज एहसास नहीं है. ●

Small Screen

कृष्णा का दोस्ती का हाथ

एक समय के दिग्गज अभिनेता गोविंदा और उन के भांजे कृष्णा अभिषेक के बीच के आपसी टकराव सब के सामने हैं. हर कोई जानता है, अब खाई लंबी खिंच गई है. दोनों ही सिनेमा और टीवी जगत के चर्चित कलाकार हैं. लेकिन यह देखा गया है कि जबजब दोनों के एक स्टेज शेयर करने की बात आती है तो वे दोनों साथ तक खड़े नहीं होना चाहते. गोविंदा जब भी 'द कपिल शर्मा शो' में आते हैं तो कृष्णा उस एपिसोड की शूटिंग स्किप कर देते हैं जो जाहिर है सुर्खियां बटोरता है.

हालांकि, 'टीकेएसएस' के नए एपिसोड में कृष्णा ने गोविंदा की ओर यह कह कर दोस्ती का हाथ बढ़ाया कि 'परिवार में विवाद होते हैं लेकिन वे आखिरकार इसे सुलझा लेंगे.' इस के बाद कृष्णा की तरफ से चीजें थोड़ीबहुत ठीक होती महसूस की जा सकती हैं.

इस एपिसोड में रवीना टंडन और फराह खान गैस्ट के तौर पर आए थे. 'सपना' की भूमिका निभाने वाले कृष्णा ने रवीना को बताया कि उन्हें उन की फिल्म 'बड़े मियां, बड़े मियां' बहुत पसंद है. रवीना ने उस की बात सही की और कहा कि यह 'बड़े मियां छोटे मियां' है. तब कृष्णा ने कहा कि उस के लिए 'छोटे मियां' (गोविंदा) 'बड़े मियां' ही हैं.'

कृष्णा ने आगे कहा, 'मैं ने जो भी कुछ सीखा है उन्हीं से सीखा है. यह अलग बात है वे मुझे छोटे मियां नहीं मानते हैं. ठीक है, फैमिली है, चलता रहता है, करेंगे बात, सौल्व करेंगे, कोई प्रौब्लम नहीं.'

बच्चों के लिए मुश्किल समय : प्रणिता पंडित

प्रणिता पंडित टीवी जगत की मशहूर अभिनेत्री हैं. वे 'कवच', 'जमाई राजा', 'उतरन' जैसे कई शोज का हिस्सा रही हैं. उन की शादी व्यवसायी शिवी पंडित से हुई और दोनों की डेढ़ साल की सुंदर बेटी है.

प्रणिता ने 2007 में डैब्यू किया और इस के बाद लगातार काम किया. बेटी के जन्म के बाद से उन्होंने फिलहाल टीवी से ब्रेक ले लिया है. प्रणिता पंडित आज के कोविड समय में बच्चों की देखभाल को गंभीरता से लेती हैं. वे कहती हैं, “यह तीसरी लहर बच्चों के लिए खराब है और बहुत सारे बच्चे पौजिटिव भी पाए गए हैं. मेरी बेटी की तबीयत भी ठीक नहीं थी, लेकिन शुक्र है कि उसे नौर्मल फ्लू था.”

वे आगे कहती हैं, “ईमानदारी से कहूं तो जब भी मैं वायरस के बारे में खबर सुनती हूं तो बहुत घबरा जाती हूं क्योंकि मैं अपनी बेटी के बारे में सब से ज्यादा चिंतित हूं. कोविड के चलते वह अभी घर से बाहर कदम नहीं रख सकती और बगीचे में जा कर अन्य बच्चों के साथ नहीं खेल सकती. डेढ़ साल के बच्चे का मनोरंजन करना हमारे लिए भी आसान नहीं है.”

प्रणिता अपने अभिनय कैरियर को जारी रखना चाहती हैं. वे कहती हैं, “मैं अपना कैरियर पूरी तरह से नहीं छोड़ना चाहती, लेकिन अभी के लिए मेरी बेटी को मेरी जरूरत है. मैं 18 साल की उम्र से काम कर रही हूं और रुक नहीं सकती. कुछ समय बाद हो सकता है मैं काम पर वापस आ जाऊं.”

कत्थकवादक बिरजू महाराज का जाना

मशहूर कत्थकनर्तक पंडित बिरजू महाराज का 17 जनवरी को 83 वर्ष की आयु में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया. वे नर्तक होने के साथसाथ शास्त्रीय गायक भी थे और उन्हें 1983 में पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया. भारतीय सिनेमा और टीवी जगत के कलाकारों ने इसे बड़ी क्षति के तौर पर माना है.

टीवी जगत के कलाकारों ने भी पंडित बिरजू महाराज के निधन को ले कर अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं. इस में अंकिता भार्गव, करण पटेल सरीके कई कलाकार शामिल हैं.

बिरजू महाराज ने मात्र 13 वर्ष की आयु में ही नई दिल्ली के संगीत भारती में नृत्य की शिक्षा देना शुरू कर दिया था. उस के बाद उन्होंने दिल्ली में ही भारतीय कला केंद्र में सिखाना शुरू किया.

सत्यजीत राय की फिल्म 'शतरंज के खिलाड़ी' की संगीत रचना की. इस के अलावा वर्ष 2002 में बनी हिंदी फिल्म 'देवदास' में एक गाने 'काहे छेड़ छेड़ मोहे...' का नृत्य संयोजन भी किया.

हिंदी फिल्मों– 'डेढ़ इश्किया', 'उमराव जान' तथा संजय लीला भंसाली निर्देशित 'बाजी राव मस्तानी' में भी कत्थक नृत्य का संयोजन किया. बिरजू महाराज का इंडस्ट्री में बहुत बड़ा योगदान है जिसे भुलाया नहीं जा सकता. –प्रतिनिधि ●

करोड़ो लोगो का आज़माया

MYFAIR
Cream
MYFAIR
Cream

झुर्रियां
काले घेरे
छाईया

MYFAIR
रूप संवारे, त्वचा निखा़रे

- क्रीम
- साबुन
- सन स्क्रीन
- फेस वाश

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

Online Shopping:
www.zeelabpharmacy.com

(REGISTERED) RNI 6502/60 DL(c)-14/1090/2021-23 WPP U(c) 149/18/2021-23 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 14 to 20 Published on 20/01/2022, Pgs. 48

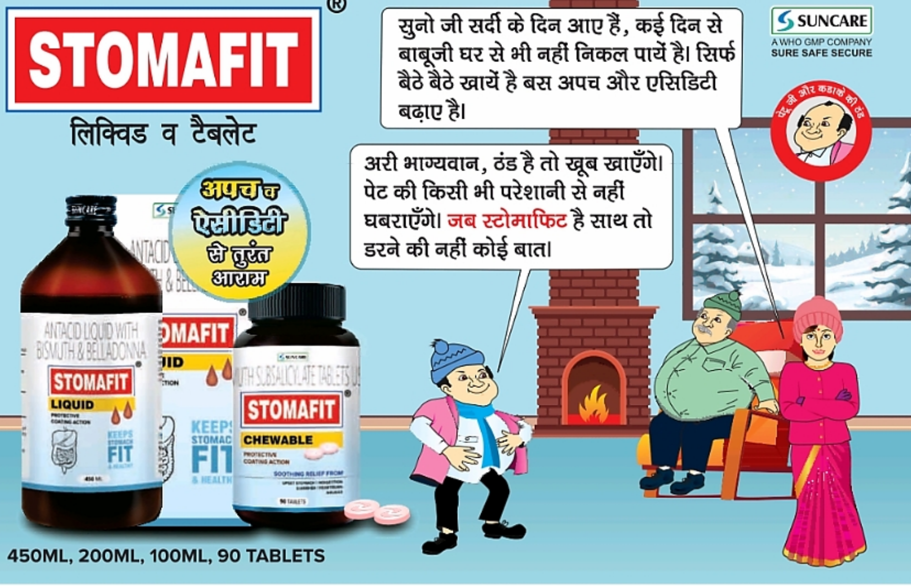
STOMAFIT®
लिक्विड व टैबलेट
SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE
सुनो जी सर्दी के दिन आए हैं, कई दिन से बाबूजी घर से भी नहीं निकल पायें है। सिर्फ बैठे बैठे खायें है बस अपच और एसिडिटी बढ़ाए है।
अरी भाग्यवान, ठंड है तो खूब खाएँगे। पेट की किसी भी परेशानी से नहीं घबराएँगे। जब स्टोमाफिट है साथ तो डरने की नहीं कोई बात।
अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
KEEPS STOMACH FIT
STOMAFIT
CHEWABLE
450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

HAEMOCAL®

Delicious Taste

परिवार के हर उम्र के—
सदस्य के लिए लाभकारी...

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

हर माता पिता की कोशिश रहती है कि बच्चों का पूर्ण विकास हो जिसके लिए सही पोषण मिलना जरूरी है। इस कोशिश में सहयोग देता है हेमोकॉल, जो शरीर में खून बढ़ाता है और कमजोरी को दूर करता है जिससे बच्चें रहते हैं स्वस्थ ओर चाहे पढाई हो या खेल कूद उनका प्रदर्शन रहता है जबरदस्त।

SUNCARE
HAEMOCAL
Delicious Taste
Iron Tonic with Folic Acid
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid

शहद सा गाढा
संतरे सा स्वादिष्ट

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com

सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपल्बध

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्केन करें

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्केन करें